शनिवार

12 सितम्बर 2026

- देहरादून
- वर्ष 34
- अंक 231
- पृष्ठ 8
- मूल्य ₹ 1.00

34 साल से देहरादून का विश्वास

दूनवैलीमेल

सांध्य दैनिक

आर.एन.आई. : 59626/94

email: doonvalley_news@yahoo.com Website: dunvalleymail.com

डीएवीपी से मान्यता प्राप्त

हरीश रावत ने कांग्रेस के पदों से इस्तीफे की पेशकश की

◆2016 की भर्ती परीक्षा की जांच ने फिर खोला कांग्रेस सरकार के दौर का नया अध्याय

◆2027 चुनाव से पहले कांग्रेस के सबसे बड़े चेहरे के कदम ने बढ़ाई पार्टी की मुश्किलें

◆पूर्व मुख्यमंत्री हरीश रावत ने कार्रवाई को राजनीतिक नैरेटिव गढ़ने की कोशिश बताया

कार्यालय संवाददाता

देहरादून। उत्तराखंड की राजनीति में शनिवार सुबह उस वक्त बड़ा सियासी भूचाल आ गया, जब पूर्व मुख्यमंत्री और कांग्रेस के वरिष्ठ नेता हरीश रावत ने पार्टी में अपने सभी पदों से इस्तीफे की पेशकश कर दी। पूर्व मुख्यमंत्री के इस फैसले को उनके पूर्व ओएसडी और वर्तमान निजी सहायक चंदन सिंह जीना के ठिकानों पर प्रवर्तन निदेशालय की कार्रवाई के बाद उठाया गया कदम माना जा रहा है। हालांकि रावत ने कांग्रेस की प्राथमिक सदस्यता छोड़ने की बात नहीं कही है।

ईडी ने 2016 की ग्राम पंचायत विकास अधिकारी परीक्षा में कथित अनियमितताओं से जुड़े धनशोधन मामले में देहरादून में कई ठिकानों पर कार्रवाई की। एजेंसी के मुताबिक चंदन सिंह जीना के परिसर से 32 लाख रुपये नकद और 12 महंगी घड़ियां बरामद की गईं। जीना रावत के मुख्यमंत्री कार्यकाल के दौरान ओएसडी रह चुके हैं और वर्तमान में उनके निजी सहायक के रूप में कार्यरत बताए गए हैं। हरीश रावत का इस्तीफा ऐसे समय आया है, जब उत्तराखंड कांग्रेस 2027 के विधानसभा चुनाव के लिए भाजपा को चुनौती देने की तैयारी में जुटी है। ऐसे में रावत का पद छोड़ना केवल व्यक्तिगत नैतिकता का सवाल नहीं, बल्कि कांग्रेस की चुनावी रणनीति के लिए भी बड़ा राजनीतिक संदेश है।

रावत लंबे समय से उत्तराखंड कांग्रेस के सबसे प्रभावशाली और अनुभवी चेहरों में रहे हैं। पार्टी की चुनावी राजनीति में उनका प्रभाव, पहाड़ और मैदान के बीच राजनीतिक संतुलन साधने की उनकी क्षमता और कार्यकर्ताओं के बीच उनकी पकड़ कांग्रेस की रणनीति का महत्वपूर्ण हिस्सा रही है। कांग्रेस की उत्तराखंड प्रदेश चुनाव समिति में भी रावत का नाम शामिल रहा है। ऐसे में सवाल यह है कि क्या रावत का पदों से हटना कांग्रेस के लिए नैतिक दबाव कम करेगा या चुनावी मैदान में उसके सामने नया संकट खड़ा करेगा?

रावत ने अपने सहयोगी पर लगे आरोपों को लेकर अविश्वास जताया है। उनका कहना है कि वह आरोपों पर विश्वास नहीं करते, लेकिन यदि जांच में उनकी ओर से कोई गलती साबित होती है तो उसके लिए उन्हें जिम्मेदार ठहराया जाना चाहिए। उन्होंने मौजूदा घटनाक्रम को उनके और उनके सहयोगियों के खिलाफ राजनीतिक नैरेटिव तैयार करने की कोशिश के रूप में भी देखा है। यही वह बिंदु है जहां रावत का इस्तीफा महज संगठनात्मक निर्णय न रहकर राजनीतिक संदेश बन जाता है। एक तरफ वह अपने सहयोगी के बचाव में खड़े दिखाई दे रहे हैं, दूसरी तरफ पद छोड़कर जांच से अपने राजनीतिक कद को अलग रखने की कोशिश कर रहे हैं।

2027 का चुनाव जैसे-जैसे नजदीक आएगा, 2016 की कांग्रेस सरकार का कार्यकाल भाजपा के निशाने पर रहना तय माना जा रहा है। भर्ती परीक्षाओं में कथित अनियमितताओं का मुद्दा पहले ही उत्तराखंड की राजनीति में युवाओं के बीच संवेदनशील विषय बन चुका है। ऐसे में ईडी की कार्रवाई और उसके बाद रावत का इस्तीफा भाजपा को कांग्रेस पर हमला करने के लिए नया राजनीतिक हथियार दे सकता है। भाजपा इसे कांग्रेस शासनकाल की व्यवस्था पर सवाल के रूप में पेश कर सकती है, जबकि कांग्रेस के सामने चुनौती होगी कि वह जांच को राजनीतिक प्रतिशोध के आरोपों से जोड़ते हुए अपनी राजनीतिक जमीन बचाए।

सबसे बड़ा सवाल अब कांग्रेस के भीतर उठेगा। पार्टी पहले ही 2027 के लिए सरकार के खिलाफ बेरोजगारी, भर्ती परीक्षाओं, कानून-व्यवस्था, एसआईआर और जनसरोकार के मुद्दे उठाने की तैयारी में है। ऐसे समय में उसके सबसे वरिष्ठ नेताओं में से एक का नाम एक जांच के राजनीतिक प्रभाव में आना पार्टी की धार को कमजोर कर सकता है। दूसरा सवाल नेतृत्व को लेकर है। क्या कांग्रेस हरीश रावत के प्रभाव से बाहर निकलकर नई पीढ़ी के नेतृत्व को आगे करेगी या रावत अब भी पार्टी की चुनावी रणनीति के केंद्र में बने रहेंगे?

रावत का यह कदम उत्तराखंड कांग्रेस की अंदरूनी राजनीति के लिए भी महत्वपूर्ण है। पिछले कई वर्षों से कांग्रेस की राजनीति में रावत का प्रभाव और पार्टी के दूसरे धड़ों के साथ उनका समीकरण चर्चा में रहा है। अब जब विधानसभा चुनाव सिर पर हैं, उनका पद छोड़ना पार्टी के भीतर नेतृत्व, उम्मीदवार चयन और चुनावी रणनीति को प्रभावित कर सकता है। हालांकि इसे कांग्रेस छोड़ने के संकेत के रूप में देखना अभी जल्दबाजी होगी। उपलब्ध जानकारी के मुताबिक रावत ने पार्टी के पदों से इस्तीफे की पेशकश की है, कांग्रेस की सदस्यता से नहीं। लेकिन राजनीतिक रूप से संदेश साफ है कि 2016 की परछाइयां एक बार फिर 2027 के चुनावी मैदान तक पहुंच गई हैं। ईडी की कार्रवाई ने पुराने भर्ती प्रकरण को फिर राजनीतिक विमर्श के केंद्र में ला दिया है और रावत के इस्तीफे ने इसे और बड़ा बना दिया है।

अब जांच एजेंसियां अपना काम करेंगी, लेकिन उत्तराखंड की राजनीति में असली लड़ाई उस नैरेटिव की होगी जिसमें एक तरफ कांग्रेस इसे राजनीतिक प्रतिशोध बताएगी और दूसरी तरफ भाजपा इसे भ्रष्टाचार के खिलाफ कार्रवाई के रूप में पेश करेगी। 2027 की जंग से पहले रावत का पद छोड़ना कांग्रेस के लिए सिर्फ एक इस्तीफा नहीं, बल्कि अपने सबसे अनुभवी चेहरे के राजनीतिक कवच पर आया बड़ा दबाव है।

कांग्रेस से इस्तीफे की पेशकश के बाद पूर्व सीएम रावत का बड़ा बयान

कांग्रेस मेरे खून, मेरी हड्डियों में है:हरीश रावत

हमारे संवाददाता

देहरादून। पूर्व सीएम और कांग्रेस नेता हरीश रावत ने कांग्रेस से इस्तीफा देने की पेशकश को लेकर कहा कि ईडी की कार्रवाई से अगर पार्टी के भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ने के नैरेटिव पर कोई असर पड़ता है, तो मैं त्यागपत्र देना चाहूंगा।

पूर्व सीएम और कांग्रेस नेता हरीश रावत ने कांग्रेस से इस्तीफा देने को लेकर स्थिति साफ की है। हरीश रावत ने कहा कि उन्होंने इस्तीफे की पेशकश की है। उन्होंने कहा कि ईडी की कार्रवाई से अगर कांग्रेस पार्टी के भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ने के नैरेटिव पर कोई असर पड़ता है, तो पार्टी के प्रदेश कार्यकारिणी के सदस्य और एआईसीसी की वर्किंग कमेटी के सदस्य के पदों से त्यागपत्र देना चाहूंगा।

हरीश रावत ने कहा कि कांग्रेस पार्टी की सदस्यता मेरे खून और हड्डियों में है, हरीश रावत जो कुछ भी है, उस सबका निर्माण करती है। वह तो मेरे साथ ही स्वर्ग में भी जाएगी। बता दें कि पूर्व सीएम हरीश रावत ने अपने निजी सचिव और पूर्व ओएसडी और चंदन सिंह जीना पर ईडी की कार्रवाई को लेकर सवाल खड़े किए थे।

हरदा ने सोशल मीडिया पोस्ट में पार्टी की लड़ाई के लिए अपने कांग्रेस के पदों से इस्तीफा देने की बात की थी, हालांकि उन्होंने अब स्पष्ट किया है कि अगर पार्टी को इस कार्रवाई की वजह से कोई आगे भ्रष्ट्राचार के खिलाफ लड़ने में कोई परेशानी हो तो वे इस्तीफा देना चाहेंगे। साफ है कि हरदा ने इस्तीफा देने की पार्टी के सामने पेशकश की है। फिलहाल इस्तीफा देने की बात से इनकार किया है।

दून वैली मेल

संपादकीय

वैश्विक व्यापार में हिस्सेदारी

दुनिया की अर्थव्यवस्था अब केवल उत्पादन की क्षमता से नहीं, बल्कि वैश्विक व्यापार में अपनी हिस्सेदारी से भी शक्ति का निर्धारण करती है। जिस देश की वस्तुएं, सेवाएं, तकनीक और पूंजी दुनिया के बाजारों में जितनी अधिक पहुंच रखती हैं, उसका आर्थिक और रणनीतिक प्रभाव उतना ही व्यापक होता है। यही कारण है कि आज अमेरिका और चीन के बीच व्यापारिक वर्चस्व की लड़ाई केवल शुल्क, आयात-निर्यात और बाजार तक सीमित नहीं है। इसके पीछे वैश्विक आपूर्ति शृंखलाओं, तकनीक, ऊर्जा, खनिजों और भविष्य की अर्थव्यवस्था पर नियंत्रण की बड़ी प्रतिस्पर्धा है। इस बदलते परिदृश्य में भारत के सामने सबसे बड़ा सवाल यह नहीं है कि वह दुनिया की तीसरी बड़ी अर्थव्यवस्था कब बनेगा। असली सवाल यह है कि जब वैश्विक व्यापार की तस्वीर बदलेगी, तब उसमें भारत की हिस्सेदारी कितनी होगी? भारत लंबे समय से दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं में शामिल है। विशाल घरेलू बाजार, युवा आबादी, डिजिटल अर्थव्यवस्था और बढ़ती विनिर्माण क्षमता उसकी बड़ी ताकत हैं। लेकिन आर्थिक आकार और वैश्विक व्यापार में हिस्सेदारी दो अलग-अलग चीजें हैं। बड़ी अर्थव्यवस्था होना जरूरी है, पर दुनिया के बाजार में अपनी जगह बनाना उससे भी ज्यादा जरूरी है। चीन ने पिछले कुछ दशकों में इसी अंतर को समझा। उसने केवल अपने घरेलू बाजार पर भरोसा नहीं किया, बल्कि दुनिया का कारखाना बनने की रणनीति अपनाई। इलेक्ट्रानिक्स से लेकर मशीनरी, रसायन, सौर ऊर्जा उपकरण और उपभोक्ता वस्तुओं तक उसने वैश्विक बाजारों में अपनी मौजूदगी स्थापित की। परिणाम सामने हैकृविश्व व्यापार की आपूर्ति शृंखलाओं में चीन की भूमिका बेहद महत्वपूर्ण हो चुकी है। भारत के लिए चुनौती यहीं से शुरू होती है। भारत को यदि वैश्विक व्यापार में अपनी हिस्सेदारी बढ़ानी है तो उसे केवल मेक इन इंडिया के नारे से आगे बढ़ना होगा। उत्पादन की लागत, गुणवत्ता, लाजिस्टिक्स, बंदरगाहों की क्षमता, बिजली की उपलब्धता, कर व्यवस्था, कुशल श्रम और नियामकीय सरलता इन सभी मोर्चों पर प्रतिस्पर्धी होना होगा। दुनिया अब चीन पर अपनी निर्भरता कम करने की कोशिश कर रही है। यह भारत के लिए ऐतिहासिक अवसर है। बहुराष्ट्रीय कंपनियां अपनी आपूर्ति शृंखलाओं में विविधता चाहती हैं। चीन प्लस वन जैसी रणनीतियां इसी बदलाव का संकेत हैं। लेकिन अवसर अपने आप निवेश में नहीं बदलता। उसके लिए भारत को विश्वसनीय विनिर्माण केंद्र साबित करना होगा। भारत की दूसरी बड़ी ताकत सेवा क्षेत्र है। सूचना प्रौद्योगिकी, वित्तीय सेवाएं, डिजिटल सेवाएं, परामर्श और पेशेवर सेवाओं में भारत ने दुनिया में अपनी विशिष्ट पहचान बनाई है। लेकिन आने वाले समय में केवल सेवाओं का निर्यात पर्याप्त नहीं होगा। भारत को वस्तु और सेवा दोनों क्षेत्रों में अपनी वैश्विक हिस्सेदारी बढ़ानी होगी। विशेष रूप से इलेक्ट्रानिक्स, सेमीकंडक्टर, रक्षा उत्पादन, औषधि, आटोमोबाइल, हरित ऊर्जा उपकरण, मशीनरी और खाद्य प्रसंस्करण जैसे क्षेत्रों में भारत के पास बड़ा अवसर है। यदि इन क्षेत्रों में घरेलू उत्पादन को वैश्विक आपूर्ति शृंखलाओं से जोड़ा जाता है तो निर्यात में उल्लेखनीय वृद्धि संभव है। लेकिन इसके लिए एक कठिन राजनीतिक और आर्थिक निर्णय भी जरूरी हैकृभारत को अपने बाजार और अपने उद्योग के बीच संतुलन साधना होगा। अत्यधिक संरक्षण से घरेलू उद्योग प्रतिस्पर्धा से बच सकता है, लेकिन लंबे समय में वह वैश्विक स्तर पर कमजोर भी पड़ सकता है। दूसरी ओर, बिना तैयारी के विदेशी प्रतिस्पर्धा के लिए बाजार खोलना छोटे और मध्यम उद्योगों के लिए संकट पैदा कर सकता है। इसलिए नीति का लक्ष्य संरक्षण नहीं, प्रतिस्पर्धा के लिए सक्षम बनाना होना चाहिए। वैश्विक व्यापार का अगला चरण और भी जटिल होगा। व्यापार युद्ध, भू-राजनीतिक तनाव, समुद्री मार्गों की सुरक्षा, ऊर्जा संकट, तकनीकी प्रतिबंध और महत्वपूर्ण खनिजों की राजनीति विश्व व्यापार को प्रभावित करेंगे। ऐसे समय में किसी एक देश या एक बाजार पर निर्भरता जोखिमपूर्ण होगी। भारत को इसी कारण यूरोप, अमेरिका, पश्चिम एशिया, अफ्रीका, दक्षिण-पूर्व एशिया और लैटिन अमेरिका के साथ अपने व्यापारिक संबंधों का विस्तार करना होगा। भारत जितने अधिक बाजारों में अपनी मजबूत उपस्थिति बनाएगा, वैश्विक झटकों के सामने उसकी अर्थव्यवस्था उतनी ही सुरक्षित होगी। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि वैश्विक व्यापार में हिस्सेदारी केवल केंद्र सरकार की नीति से नहीं बढ़ेगी। इसके लिए राज्यों को भी प्रतिस्पधर्ी बनना होगा। जिस राज्य में जमीन, बिजली, परिवहन, कौशल, कानून-व्यवस्था और निवेश की प्रक्रिया बेहतर होगी, उत्पादन वहीं जाएगा। उत्तराखंड जैसे पहाड़ी राज्यों के लिए भी इसका अलग अर्थ है। यहां बड़े पैमाने का पारंपरिक विनिर्माण संभव नहीं तो औषधीय पौधों, जैविक कृषि, स्थानीय उत्पादों, पर्यटन, आईटी-सक्षम सेवाओं और हिमालयी उत्पादों को वैश्विक बाजार से जोड़ने की रणनीति बनानी होगी। भारत की महत्वाकांक्षा यदि केवल जीडीपी के आकार तक सीमित रही तो वह अधूरी होगी। आर्थिक शक्ति का वास्तविक पैमाना यह होगा कि भारत दुनिया को क्या बेचता है, कितनी मात्रा में बेचता है और वैश्विक आपूर्ति शृंखला में उसका स्थान कितना महत्वपूर्ण है। आज दुनिया बदल रही है। अमेरिका अपने उद्योग को वापस मजबूत करना चाहता है, चीन वैश्विक बाजारों में अपनी पकड़ बनाए रखना चाहता है और यूरोप अपनी रणनीतिक स्वायत्तता बढ़ा रहा है। इस पुनर्संरचना के बीच भारत के पास एक दुर्लभ अवसर है। लेकिन अवसर और उपलब्धि के बीच नीति, क्रियान्वयन और प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता की खाई है। भारत को दुनिया का सबसे बड़ा बाजार बने रहने से आगे बढ़कर दुनिया के सबसे महत्वपूर्ण आपूर्तिकर्ताओं में शामिल होना होगा। वैश्विक व्यापार की मेज पर केवल खरीदार की कुर्सी पर्याप्त नहीं है और भारत को निर्णायक हिस्सेदार बनना होगा।

उत्तराखंड की सियासत के गढ़ में एनएसयूआई ने गाड़ा झंडा

कार्यालय संवाददाता

देहरादून। उत्तराखंड की सियासत में जहां 2027 के विधानसभा चुनाव की बिसात बिछनी शुरू हो चुकी है, वहीं कांग्रेस ने सत्ता की लड़ाई से पहले छात्र राजनीति के मैदान में अपनी जमीन मजबूत करने की कवायद तेज कर दी है। कांग्रेस की छात्र इकाई एनएसयूआई ने प्रदेश के छात्र राजनीति के गढ़ों में संगठनात्मक सक्रियता बढ़ाते हुए युवाओं के बीच अपनी पैठ बनाने का दावा किया है। संगठन का लक्ष्य केवल छात्रसंघ चुनाव तक सीमित नहीं, बल्कि आने वाले विधानसभा चुनाव के लिए युवा नेतृत्व की नई फौज तैयार करना भी माना जा रहा है।

उत्तराखंड की राजनीति में छात्र राजनीति की भूमिका हमेशा महत्वपूर्ण रही है। विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों से निकले छात्र नेता आगे चलकर मुख्यधारा की राजनीति में पहुंचे हैं। यही वजह है कि एनएसयूआई की सक्रियता को कांग्रेस के लिए महज संगठनात्मक गतिविधि नहीं, बल्कि भविष्य की सियासी निवेश रणनीति के तौर पर देखा जा रहा है। एनएसयूआई का फोकस छात्रसंघ चुनावों में प्रभाव बढ़ाने के साथ युवाओं के उन मुद्दों को राजनीतिक आवाज देने पर है, जो प्रदेश की राजनीति में लगातार बड़ा सवाल बन रहे हैं। सरकारी भर्तियों में पारदर्शिता, बेरोजगारी, प्रतियोगी परीक्षाओं की विश्वसनीयता, शिक्षा की गुणवत्ता और युवाओं के पलायन जैसे मुद्दे कांग्रेस की छात्र इकाई के एजेंडे में प्रमुखता से रखे जा रहे हैं।

कांग्रेस के लिए यह रणनीति इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि उत्तराखंड में युवा मतदाता चुनावी परिणामों को प्रभावित करने वाली बड़ी ताकत है। जिस संगठन की छात्र परिसरों में पकड़ मजबूत होगी, उसके पास भविष्य की राजनीति के लिए कार्यकर्ताओं और नेताओं का मजबूत आधार तैयार करने का अवसर भी होगा। उत्तराखंड में लंबे समय से भाजपा का संगठनात्मक नेटवर्क मजबूत माना जाता है। ऐसे में एनएसयूआई की सक्रियता का एक बड़ा राजनीतिक अर्थ यह भी है कि कांग्रेस भाजपा के मजबूत माने जाने वाले सामाजिक और युवा आधार में सेंध लगाने की कोशिश कर रही है।

◆छात्र राजनीति के मैदान से 2027 की सियासी पिच तैयार करने में जुटी कांग्रेस
◆बेरोजगारी, भर्ती परीक्षाओं, छात्र हितों के मुद्दों को हथियार बनाएगी एनएसयूआई
◆भाजपा के मजबूत राजनीतिक आधार में युवा वोट बैंक को चुनौती देने की तैयारी

कांग्रेस के सामने चुनौती केवल भाजपा को चुनाव में हराने की नहीं है। उसे बूथ स्तर तक मजबूत संगठन खड़ा करना है और इसके लिए छात्र राजनीति से निकलने वाले कार्यकर्ता महत्वपूर्ण साबित हो सकते हैं। यही कारण है कि एनएसयूआई की गतिविधियों को कांग्रेस के 2027 मिशन की शुरुआती प्रयोगशाला के रूप में भी देखा जा सकता है। उत्तराखंड में सरकारी नौकरी युवाओं की राजनीति का सबसे संवेदनशील मुद्दा है। भर्ती परीक्षाओं में कथित अनियमितताओं और पेपर लीक के मामलों ने युवाओं में व्यवस्था को लेकर सवाल खड़े किए हैं। एनएसयूआई इसी असंतोष को राजनीतिक मुद्दे में बदलने की तैयारी में है। संगठन यदि छात्र परिसरों से निकलकर भर्ती परीक्षाओं और रोजगार के सवाल को व्यापक युवा आंदोलन का रूप देने में सफल होता है तो इसका असर सीधे 2027 की राजनीति पर पड़ सकता है। कांग्रेस के लिए यह भाजपा सरकार को घेरने का मौका भी है और अपने संगठन को पुनर्जीवित करने का माध्यम भी।

एनएसयूआई की सबसे बड़ी राजनीतिक उपयोगिता कांग्रेस के लिए यह हो सकती है कि इससे पार्टी को नई पीढ़ी का नेतृत्व मिल सके। उत्तराखंड कांग्रेस में लंबे समय से पुराने और स्थापित चेहरों का प्रभाव रहा है। ऐसे में छात्र राजनीति से आने वाले नए नेताओं को आगे बढ़ाना पार्टी के लिए संगठनात्मक बदलाव का रास्ता खोल सकता है। लेकिन इसके लिए एनएसयूआई को केवल चुनावी पोस्टर और नारों से आगे बढ़ना होगा। परिसरों में छात्र समस्याओं पर लगातार संघर्ष, संवाद और संगठनात्मक उपस्थिति ही उसे स्थायी राजनीतिक ताकत दे सकती है।

एनएसयूआई ने अगर छात्र राजनीति के मैदान में अपना झंडा गाड़ा है तो अब

▶▶ शेष पृष्ठ 7 पर

कांग्रेस को लगा 'सियासी' नेत्र रोग

कार्यालय संवाददाता

देहरादून। कांग्रेस के लगातार सरकार पर हमलावर होने के बीच भाजपा ने पलटवार करते हुए विपक्ष पर तीखा हमला बोला है। भाजपा का कहना है कि कांग्रेस को अब राजनीतिक नेत्र रोग हो गया है। यही वजह है कि उसे जमीन पर दिखाई दे रहा चहुंमुखी विकास नजर नहीं आ रहा। भाजपा के अनुसार प्रदेश में सड़क, स्वास्थ्य, शिक्षा, कनेक्टिविटी, रोजगार, महिला सशक्तीकरण, पर्यटन और आधारभूत ढांचे से जुड़े क्षेत्रों में लगातार काम हो रहा है, लेकिन कांग्रेस इन उपलब्धियों को देखने के बजाय राजनीतिक चश्मे से केवल कमियां तलाशने में जुटी है।

भाजपा का कहना है कि विपक्ष का काम सवाल उठाना है, लेकिन सवाल और दुष्प्रचार में अंतर होता है। कांग्रेस यदि सरकार के कामकाज पर तथ्य आधारित सवाल उठाती है तो सरकार उसका जवाब देने के लिए तैयार है, लेकिन हर विकास कार्य को नकारना और हर उपलब्धि में राजनीति तलाशना जनता को गुमराह करने की कोशिश है। भाजपा का दावा है कि वह कांग्रेस की इस रणनीति का जवाब आरोप-प्रत्यारोप से नहीं, बल्कि अपनी विकास की लकीर को और लंबा करके देगी।

भाजपा ने अपने राजनीतिक नैरेटिव के केंद्र में समाज के अंतिम पायदान पर खड़े व्यक्ति को रखा है। पार्टी का कहना है कि विकास का वास्तविक पैमाना केवल बड़े प्रोजेक्ट और चमकती सड़कें नहीं हैं, बल्कि यह देखना भी जरूरी है कि सरकारी योजनाओं का लाभ उस व्यक्ति तक पहुंच रहा है या नहीं, जिसके पास संसाधन सबसे कम हैं। भाजपा के अनुसार गरीब, किसान, महिला, युवा, बुजुर्ग और दूरस्थ पर्वतीय क्षेत्रों में रहने वाले लोगों तक सुविधाओं और योजनाओं की पहुंच बढ़ाने पर सरकार का जोर है। पार्टी इसे महज चुनावी घोषणा नहीं बल्कि शासन की कार्यशैली का हिस्सा बता रही है।

◆विकास दिखता तो दुष्प्रचार की जरूरत नहीं पड़ती
◆भाजपा का पलटवार-जमीन पर चहुंमुखी विकास
◆कांग्रेस को उपलब्धियां नजर नहीं आ रहीं आजकल
◆सुविधाएं पहुंचाने को बताया सरकार का मूल मंत्र

भाजपा का सीधा आरोप है कि कांग्रेस विकास के सवाल को राजनीतिक संघर्ष में बदलने की कोशिश कर रही है। पार्टी का कहना है कि विपक्ष को प्रदेश में हो रहे काम दिखाई देने चाहिए, लेकिन कांग्रेस का पूरा फोकस सरकार की आलोचना पर है। भाजपा नेताओं का तर्क है कि यदि विपक्ष सरकार की किसी योजना में कमी बताता है तो उस पर चर्चा हो सकती है, लेकिन हर काम को नकार देना प्रदेश की जनता के साथ भी अन्याय है। पार्टी का कहना है कि जनता अब दावों से अधिक काम को देख रही है और आने वाले समय में वही राजनीतिक फैसला करेगी।

हालांकि कांग्रेस सरकार के इन दावों को स्वीकार करने के बजाय बेरोजगारी, महंगाई, पलायन, भर्ती परीक्षाओं, कानून-व्यवस्था, मूल निवास और भू-कानून जैसे मुद्दों पर सरकार को लगातार घेर रही है। विपक्ष का तर्क है कि केवल योजनाओं की घोषणा और बड़े विकास प्रोजेक्टों से जनता की समस्याएं खत्म नहीं होतीं। ऐसे में भाजपा का चहुंमुखी विकास वाला दावा कांग्रेस के लिए राजनीतिक चुनौती है तो कांग्रेस के लगातार सवाल भाजपा के लिए जवाबदेही की कसौटी।

यही वजह है कि उत्तराखंड की सियासत अब एक दिलचस्प मुकाम पर पहुंचती दिखाई दे रही है। एक तरफ भाजपा विकास कार्यों को अपनी सबसे बड़ी उपलब्धि बताकर जनता के बीच जाने की तैयारी कर रही है, वहीं कांग्रेस सरकार के दावों की जमीन पर पड़ताल करने और कमियां गिनाने की रणनीति पर आगे बढ़ रही है। भाजपा का संकेत साफ है कि वह कांग्रेस के हर आरोप का जवाब देने में अपनी राजनीतिक ऊर्जा खर्च करने के बजाय विकास को अपना मुख्य चुनावी हथियार बनाना चाहती है। पार्टी का मानना है कि चुनावी राजनीति में सबसे प्रभावी जवाब वही है, जिसे जनता अपनी आंखों से देख सके और अपने जीवन में महसूस कर सके।

इसी सोच के तहत भाजपा कांग्रेस के आरोपों को दुष्प्रचार बताते हुए अपनी उपलब्धियों को गांव, गरीब और अंतिम

▶▶ शेष पृष्ठ 7 पर

लापरवाही पर बीआरओ को नोटिस जारी करने के निर्देश

उत्तरकाशी(आरएनएस)। मानसून सीजन के बाद चारधाम यात्रा के दूसरे चरण को सुरक्षित, सुव्यवस्थित और सुचारू रूप से संचालित करने के लिए डीएम प्रशांत आर्य ने अधिकारियों की बैठक ली। उन्होंने अधिकारियों को गंगोत्री हाईवे पर धीमी गति से कार्य और लापरवाही करने पर बीआरओ को नोटिस जारी करने निर्देश दिए। साथ ही यमुनोत्री यात्रा मार्ग पर स्वच्छता व्यवस्था के लिए उपजिलाधिकारी को निगरानी करने और किसी प्रकार की लापरवाही पर कार्रवाई करने के लिए कहा। डीएम ने यात्रा व्यवस्थाओं को दुरुस्त करने के लिए अधिकारियों को फील्ड में जाकर उनके विभागों से संबंधित कार्यों का स्थलीय निरीक्षण कर दुरुस्त करने के निर्देश दिये। उन्होंने गंगोत्री यात्रा मार्ग के नगुण, रतूड़ीसेरा, बंदरकोट, चड़ेथी, लिमच्यागाड और पापड़गाड जैसे संवेदनशील स्थलों पर मलबा हटाकर मार्ग खुला रखने की हिदायत दी। दूसरी ओर यमुनोत्री मार्ग पर स्यानाचट्टी, पालीगाड, सिलाईबैंड और औजारी में ईई एनएच को पर्याप्त मशीनरी और कार्य बल तैनात कर यात्रा सुचारू बनाए रखने के निर्देश दिए। दोनों धामों के मुख्य पड़ावों पर स्वच्छता व्यवस्था बेहतर बनाने के लिए जिला पंचायत और सुलभ इंटरनेशनल को उचित व्यवस्था करने को कहा। सुलभ को शौचालयों के टूटे दरवाजों की मरम्मत कराने तथा नियमित जल आपूर्ति और निरंतर साफ-सफाई सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। यात्रा मार्ग पर घोड़े-खच्चर और डंडी-कंडी व्यवस्था को मानक के अनुसार संचालित करने के लिए पशुओं के स्वास्थ्य परीक्षण, वाटर हीटर, चरी व मयूल टास्क फोर्स को प्रभावी बनाने को कहा।

चूनाधारा में बना एक और नया डेंजर जोन

कोटद्वार(आरएनएस)। पौड़ी नेशनल हाईवे पर कोटद्वार-दुगड्डा के बीच वर्ष 2023 की आपदा के बाद बने 11 डेंजर जोन का ट्रीटमेंट अभी शुरू नहीं हो पाया है। इस बीच दुर्गा देवी के बाद अब दुगड्डा के चूनाधारा में नया भूस्खलन क्षेत्र सक्रिय होने से एनएच खंड धुमाकोट की मुश्किलें बढ़ गई हैं। चूनाधारा में पहाड़ी से लगातार मलबा आने के कारण बारिश के दौरान हाईवे पर यातायात प्रभावित हो रहा है। क्षेत्र में सात दुकानें और गैस गोदाम भी भूस्खलन की जद में आने का खतरा बढ़ गया है। वर्ष 2023 की आपदा के बाद बने 11 डेंजर जोन के ट्रीटमेंट के लिए एनएच प्रशासन ने टीएचडीसी से थर्ड पार्टी सर्वे कराया था। सर्वे के आधार पर प्रस्ताव तैयार कर भारत सरकार को भेजा गया, जहां से ट्रीटमेंट के लिए 89 करोड़ स्वीकृत हुए हैं। टेंडर प्रक्रिया पूरी हो चुकी है। अब बांड बनने व बरसात खत्म होने पर काम शुरू होना है। इसी बीच दुर्गादेवी मंदिर के पास नया डेंजर जोन बन चुका है। यहां पूर्व में पहाड़ी से पत्थर गिरने से लोनिवि मंत्री सतपाल महाराज की कार का आगे का शीशा टूट गया था। बीती तीन सितंबर को चूनाधारा पेयजल स्रोत के ऊपरी हिस्से में करीब 200 मीटर से अधिक ऊंचाई से पहाड़ी का हिस्सा टूटकर हाईवे पर आ गिरा था। मलबे, पत्थर और पेड़ों के गिरने से कुछ समय के लिए दोनों ओर यातायात ठप हो गया था। चूनाधारा से करीब 50 मीटर दुगड्डा की ओर भी पहाड़ी में भूस्खलन होने लगा है। इसके नीचे हाईवे से सटी नगर पालिका की सात दुकानें और गैस गोदाम हैं। दुकानों का आवंटन होने से पहले ही इनके ऊपर भूस्खलन का खतरा मंडराने लगा है। जलभराव से हाईवे पर गड्ढे बन रहे हैं और पुराने पुश्ते भी खतरे की जद में हैं।

तीन गांवों के पांच परिवारों के पुनर्वासन को मिली मंजूरी

नई टिहरी(आरएनएस)। जिले के अलग-अलग क्षेत्रों में आपदा से प्रभावित परिवारों के पुनर्वासन के लंबित मामलों के निस्तारण को लेकर डीएम नितिका खंडेलवाल ने अधिकारियों को तेजी से कार्रवाई के निर्देश दिए। जिला स्तरीय पुनर्वास समिति की बैठक में घनसाली, बालगंगा, टिहरी और धनोल्टी तहसील क्षेत्र के प्रभावित परिवारों के पुनर्वासन प्रकरणों की समीक्षा की। तहसील घनसाली के कंडार मल्ला गांव के तीन परिवारों के पुनर्वासन प्रकरण में भू-विज्ञानी की रिपोर्ट समिति के समक्ष रखी गई। डीएम ने रिपोर्ट पर सहमति जताते हुए संबंधित परिवारों को पहली किश्त की धनराशि जारी करने के निर्देश दिए। गवाणा मल्ला और अक्काण गांव के एक-एक परिवार के प्रकरण में भी भू-विज्ञानी की रिपोर्ट के आधार पर पहली किश्त जारी करने के निर्देश दिए गए। तहसील बालगंगा के गेंवाली और तहसील टिहरी के पलेथ गांव के प्रभावित परिवारों के पुनर्वासन प्रकरणों की भी समीक्षा हुई। पलेथ गांव के 22 प्रभावित परिवारों में से 21 का पुनर्वासन पूरा हो चुका है। शेष एक परिवार के भूमि हस्तांतरण की कार्रवाई चल रही है। डीएम ने तहसीलदार को इसकी रिपोर्ट जल्द उपलब्ध कराने को कहा। तहसील धनोल्टी क्षेत्र से विस्थापित किए जाने वाले 20 परिवारों का पुनर्वासन पूरा हो चुका है। बताया गया कि प्रभावित सभी परिवारों को पुनर्वासन के लिए निर्धारित पहली और दूसरी किश्त की धनराशि शत-प्रतिशत जारी की जा चुकी है।

वैधानिक सूचना

सुविज्ञ पाठकों से आग्रह है कि इस समाचार पत्र में प्रकाशित किसी भी विज्ञापन में दिए गए तथ्यों, शर्तों और दावों के प्रति वह खुद भी आश्वस्त हो लें। पाठकों से आग्रह है कि वह प्रकाशित विज्ञापन से प्रभावित होकर कोई कदम उठाने से पहले अपने स्तर पर भी स्वयं के संतुष्ट होने तक संपूर्ण व्यावहारिक जानकारी कर लें। भविष्य में किसी भी प्रकाशित विज्ञापन व लेख में निहित दावों या शर्तों को लेकर पाठकगण को कोई असुविधा या परेशानी होती है तो *सांध्य दैनिक दून वैली मेल* के मुद्रक, प्रकाशक या सम्पादक की कोई जवाबदेही नहीं होगी।

–प्रबंधक विज्ञापन

'जेन-जी' की ताकत से बदल दी 'सियासत'

कार्यालय संवाददाता

देहरादून। जिस जेन-जी को कुछ साल पहले तक राजनीति से दूर, मोबाइल और सोशल मीडिया में उलझी पीढ़ी माना जाता था, आज वही पीढ़ी सत्ता के गलियारों में सबसे बड़ा सवाल बनकर खड़ी है। नेपाल में युवाओं के आक्रोश और राजनीतिक व्यवस्था के खिलाफ उठी आवाज ने जिस तरह सत्ता को चुनौती दी, उसने सिर्फ पड़ोसी देशों की राजनीति को नहीं झकझोरा, बल्कि दुनिया के राजनीतिक दलों को भी अपने भविष्य की रणनीति पर पुनर्विचार करने के लिए मजबूर कर दिया है। संदेश साफ है कि अब नेता सिर्फ मंच से युवाओं को संबोधित करके काम नहीं चला सकते, उन्हें जेन-जी की चौखट तक जाना होगा।

नेपाल का घटनाक्रम इस बदलाव का सबसे ताजा उदाहरण है। भ्रष्टाचार, बेरोजगारी, राजनीतिक अस्थिरता और जवाबदेही जैसे मुद्दों पर युवाओं की नाराजगी ने पारंपरिक राजनीतिक समीकरणों को चुनौती दी। सोशल मीडिया के जरिए तेजी से संगठित होने वाली इस पीढ़ी ने दिखा दिया कि चुनावी राजनीति में संख्या महत्वपूर्ण है, लेकिन डिजिटल दौर में असंतोष की गति और उसकी पहुंच उससे भी ज्यादा महत्वपूर्ण हो सकती है। जेन-जी को लंबे समय तक राजनीतिक दलों के लिए भविष्य का वोट बैंक माना जाता रहा। लेकिन नेपाल सहित विभिन्न देशों के घटनाक्रम ने इस धारणा को बदल दिया है। यह पीढ़ी अब सिर्फ वोट देने वाली नहीं, बल्कि राजनीतिक मुद्दे तय करने, सरकार से सवाल पूछने और नेताओं की सार्वजनिक छवि बनाने-बिगाड़ने वाली ताकत बनती जा रही है।

यही कारण है कि राजनीतिक दलों की भाषा भी बदल रही है। नेताओं के भाषणों में रोजगार, डिजिटल स्वतंत्रता, शिक्षा, पारदर्शिता, भ्रष्टाचार और अवसर जैसे मुद्दों की जगह बढ़ रही है। राजनीतिक अभियान भी अब केवल रैलियों और पोस्टरों तक सीमित नहीं हैं। इंस्टाग्राम, यूट्यूब, फेसबुक, एक्स और अन्य डिजिटल मंच राजनीतिक संवाद के नए अखाड़े बन चुके हैं। जेन-जी की राजनीति की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वह सिर्फ घोषणाओं से संतुष्ट नहीं होती। वह सवाल पूछती है कि कब? कैसे? किसके लिए? और जवाबदेही किसकी?

◆अब देशभर में नेता युवाओं की चौखट पर दे रहे हैं दस्तक
◆नेपाल से उठी आवाज ने दुनिया के नेताओं को दिया संदेश
◆सत्ता की राजनीति में सोशल मीडिया पीढ़ी की बढ़ती दखल

युवा पीढ़ी पारंपरिक राजनीतिक भाषणों और जुमलों की बजाय सीधे परिणाम देखना चाहती है। यही वजह है कि सत्ता में बैठे नेताओं के लिए अब सोशल मीडिया सिर्फ प्रचार का माध्यम नहीं रह गया है। वहां हर निर्णय की तत्काल प्रतिक्रिया होती है और राजनीतिक संदेश कुछ ही घंटों में व्यापक जनमत का रूप ले सकता है। इस बदलाव ने नेताओं के सामने नई मजबूरी पैदा की है। उन्हें अब जेन-जी को सिर्फ चुनाव के समय याद करने के बजाय लगातार उसके साथ संवाद करना पड़ रहा है।

नेपाल में जेन-जी की राजनीतिक सक्रियता ने दक्षिण एशिया में एक महत्वपूर्ण सवाल खड़ा किया है कि क्या आने वाले चुनावों में युवा असंतोष पारंपरिक दलों के लिए सबसे बड़ी चुनौती बनने जा रहा है? भारत समेत कई देशों में राजनीतिक दल पहले ही युवा मतदाताओं को साधने के लिए डिजिटल अभियान, युवा संवाद और सोशल मीडिया केंद्रित राजनीति को प्राथमिकता दे रहे हैं। लेकिन नेपाल के घटनाक्रम ने इस रणनीति को और गंभीर बना दिया है। अब सवाल सिर्फ यह नहीं है कि नेता युवाओं तक कैसे पहुंचेंगे। असली सवाल यह है कि क्या राजनीतिक दल जेन-जी के सवालों का जवाब देने के लिए अपने पुराने राजनीतिक तौर-तरीके बदलने को तैयार हैं?

इस पीढ़ी की अपेक्षा केवल रोजगार या विकास योजनाओं तक सीमित नहीं है। वह निर्णय प्रक्रिया में भागीदारी, पारदर्शिता, संस्थाओं की जवाबदेही और भ्रष्टाचार पर कठोर कार्रवाई चाहती है। वह यह भी चाहती है कि राजनीति में उसकी आवाज केवल चुनावी आंकड़ों के रूप में नहीं, बल्कि नीति निर्माण में दिखाई दे। यही वह बिंदु है जहां पारंपरिक राजनीति और जेन-जी के बीच सबसे बड़ा टकराव दिखाई देता है। राजनीतिक दल जहां संगठन, नेतृत्व और सत्ता के पुराने ढांचे के जरिए राजनीति को देखते हैं, वहीं जेन-जी अधिक विकेंद्रित, त्वरित और सवाल पूछने वाली राजनीति की तरफ बढ़ रही है।

नेपाल की घटनाओं ने भारत के राजनीतिक दलों को भी एक संकेत दिया है। उत्तराखंड जैसे राज्यों में जहां बड़ी संख्या में युवा रोजगार, पलायन, शिक्षा, भर्ती परीक्षाओं और स्थानीय अवसरों को लेकर सवाल उठाते हैं, वहां जेन-जी की भूमिका आने वाले चुनावों में महत्वपूर्ण हो सकती है। 2027 के विधानसभा चुनाव की तैयारी कर रहे दलों के लिए भी यह महज सोशल मीडिया अभियान का विषय नहीं है। युवा मतदाता क्या सोच रहा है, वह किस मुद्दे पर नाराज है और वह राजनीतिक दलों से क्या अपेक्षा करता है कि यह चुनावी रणनीति का केंद्रीय सवाल बन सकता है। अब नेताओं की चौखट पर जेन-जी को बुलाने का दौर खत्म होता दिख रहा है। जेन-जी की चौखट पर नेताओं के पहुंचने का दौर शुरू हो चुका है।

गोल्डन कार्ड संबंधित समस्याओं का निदान करे सरकार

ऋषिकेश (आरएनएस)। सेवानिवृत्त राजकीय पेंशनर्स संगठन शाखा मुनिकीरेती की मासिक ढालवाला में बैठक आयोजित की गई। अध्यक्षता शूरवीर सिंह चौहान ने की। बैठक में पेंशनर्स ने गोल्डन कार्ड से जुड़ी समस्याओं पर चर्चा करते हुए सरकार से इनके समाधान की मांग की। शूरवीर सिंह चौहान ने कहा कि कई अस्पतालों में गोल्डन कार्ड के माध्यम से चिकित्सकीय सुविधाएं उपलब्ध नहीं कराई जा रही हैं। करीब 35 हजार पेंशनर्स अभी भी गोल्डन कार्ड से वंचित हैं। उन्होंने गोल्डन कार्ड में ओपीडी की सुविधा निशुल्क करने, छोटे-बड़े सभी अस्पतालों में योजना लागू करने, अस्पतालों का बकाया भुगतान करने और छूटे पेंशनर्स को योजना से जोड़ने की मांग की।साथ ही एम्स ऋषिकेश में पेंशनर्स के लिए अलग काउंटर खोलने की मांग भी उठाई। बैठक में विदेश की जेल में बंद इंद्रमणि नौटियाल की सहायता के लिए धनराशि एकत्र की गई, जिसे उनके परिवार को भेजा जाएगा। इस दौरान हरिश्चंद्र डंगवाल, विनोद द्विवेदी और लक्ष्मीप्रसाद उनियाल ने संगठन की सदस्यता ग्रहण की।

किसानों को मुफ्त बिजली-पानी और स्थानीय युवाओं को रोजगार की मांग

हरिद्वार(आरएनएस)। किसान मजदूर संगठन सोसायटी के प्रतिनिधिमंडल ने किसानों, मजदूरों और युवाओं से जुड़े विभिन्न मुद्दों को लेकर ज्वालापुर विधायक रवि बहादुर से मुलाकात की।

संगठन ने विधायक को मांग पत्र सौंपकर किसानों को सिंचाई के लिए निशुल्क बिजली और पानी उपलब्ध कराने तथा प्रदेश के सरकारी, अर्द्धसरकारी और निजी उद्योगों में कम से कम 70 प्रतिशत स्थानीय युवाओं को रोजगार देने संबंधी शासनादेश को प्रभावी ढंग से लागू कराने की मांग की। विधायक ने मांगों को विधानसभा में प्रमुखता से उठाने का आश्वासन दिया। संगठन ने कहा कि उत्तराखंड जल और जलविद्युत संसाधनों से समृद्ध प्रदेश है। ऐसे में किसानों को सिंचाई के लिए बिजली और पानी की पर्याप्त सुविधा मिलनी चाहिए। वहीं प्रदेश में स्थापित उद्योगों में स्थानीय युवाओं को रोजगार मिलने से बेरोजगारी और पलायन की समस्या को कम करने में मदद मिलेगी। विधायक रवि बहादुर ने प्रतिनिधिमंडल को आश्वासन दिया कि मांग पत्र में उठाए गए मुद्दों को विधानसभा में प्रमुखता से रखा जाएगा।

किसानों और युवाओं से जुड़े इन मामलों को सरकार के समक्ष भी मजबूती से उठाया जाएगा। संगठन के राष्ट्रीय अध्यक्ष एडवोकेट महक सिंह सैनी ने कहा कि किसान मजदूर संगठन किसानों, मजदूरों और युवाओं के हितों की लड़ाई लोकतांत्रिक एवं संवैधानिक तरीके से जारी रखेगा।

राष्ट्रीय प्रवक्ता अरुण कुमार सैनी ने विधायक के आश्वासन का स्वागत करते हुए उम्मीद जताई कि सरकार इन मांगों पर सकारात्मक कार्रवाई करेगी। प्रतिनिधिमंडल में राष्ट्रीय प्रवक्ता अरुण कुमार सैनी, राष्ट्रीय सचिव ब्रह्म सिंह धीमान, राष्ट्रीय संगठन मंत्री एवं राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य नवीन मार्या, रुड़की महानगर कमेटी अध्यक्ष सतीश चंद फौजी, खानपुर विधानसभा अध्यक्ष मुनेश पाल, प्रदेश संरक्षक सुबोध कुमार शर्मा, रानीपुर विधानसभा अध्यक्ष अनुज शर्मा, धीरेंद्र, गौरव भार्गव, संजय मेहता, सुजीत गुप्ता और वरिष्ठ पत्रकार मनोज सैनी सहित अन्य सदस्य मौजूद रहे।

जीवनशैली में ये छोटे-छोटे बदलाव करके आप हर महीने बचा सकते हैं पैसे, जानें

हर महीने की कमाई से कुछ पैसे बचाना हर किसी की ख्वाहिश होती है। इसके लिए लोग कई तरह के तरीके भी अपनाते हैं, लेकिन कई बार ये तरीके काम नहीं आते हैं। ऐसे में अगर हम आपको कुछ छोटे-छोटे बदलाव करने के लिए कहें, जिससे हर महीने आपकी बचत बढ़ सकती है तो क्या आप ऐसा करने के लिए तैयार हैं? आइए जानते हैं कि जीवनशैली में कौन-कौन से छोटे-छोटे बदलाव करके आप पैसे बचा सकते हैं।

पानी का करें सही उपयोग : पानी का उपयोग करते समय उसे बचाने की कोशिश करें। जैसे नहाते समय बाल्टी का इस्तेमाल करें और गिलास में पानी भरकर उसका इस्तेमाल करें। इससे आप पानी की बचत कर सकते हैं। इसके अलावा अगर आप बगीचे में पानी डालने के लिए पाइप का इस्तेमाल करते हैं तो उसे खुला न रखें। पाइप के आगे स्विच लगवाएं, ताकि जब आपको पानी डालना न हो तब पाइप का पानी न बहे। इससे पानी की बचत होगी।

मेट्रो या बस में करें सफर : अगर आपको ऑफिस जाने के लिए रोजाना मेट्रो या बस से सफर करना पड़ता है तो अपनी यात्रा को सस्ती बनाने के लिए मेट्रो या बस का पास बनवा लें। अगर आपकी ऑफिस मेट्रो से 30 किलोमीटर दूर है तो महीने का मेट्रो पास बनवाने से आपकी यात्रा का किराया कम आएगा। इसके अलावा अगर आप मेट्रो या बस से ज्यादा दूर नहीं जाते हैं तो रोजाना टिकट खरीदने के बजाय मेट्रो या बस का पास बनवाएं।

घर से बाहर खाने के बजाय घर का बना खाना खाएं : अगर आप घर से बाहर रहकर खाना खाते हैं तो हर दिन आपको काफी पैसे खर्च करने पड़ते हैं। इसलिए, घर से बाहर खाना खाने के बजाय घर का बना खाना खाएं। इससे आपके स्वास्थ्य को भी लाभ होगा और आप हर महीने कुछ पैसे भी बचा सकेंगे। इसके अलावा घर का बना खाना स्वादिष्ट और पौष्टिक होता है। इसी के साथ घर का बना खाना खाने से पैसे की भी बचत होती है।

बिजली की बचत करने के लिए इन तरीकों को अपनाएं : घर में बिजली की बचत करने के लिए कुछ बातों का ध्यान रखें। जैसे जब भी आप कमरे से बाहर जाएं तो लाइट और पंखे बंद कर दें। इसके अलावा दिन के समय खिड़कियों की मदद से कमरे को रोशन रखें और रात के समय कम बिजली खर्च करने वाले बल्ब का इस्तेमाल करें। साथ ही घर में ऐसे उपकरणों का इस्तेमाल करें, जो कम बिजली का उपयोग करते हों। बिजली की बचत करने से बिल कम आएगा।

ऑनलाइन खरीदारी करते समय सोचें : अगर आप ऑनलाइन खरीदारी करना पसंद करते हैं तो अपने बजट से बाहर न जाएं और सिर्फ उन्हीं चीजों को खरीदें, जो आपकी जरूरत की हों। इसके अलावा ऑनलाइन खरीदारी करते समय छूट और ऑफर्स पर ज्यादा ध्यान दें। साथ ही किसी भी चीज को खरीदने से पहले उसकी कीमत को अन्य वेबसाइट पर जांच लें। ऐसा करने से आपको सही कीमत पर सही चीज मिलेगी और आप ज्यादा पैसे भी खर्च होने से बचा सकेंगे।

रोजाना कुछ लिखने की आदत आपके लिए होगी बहुत फायदेमंद, जानें अपनाने के सुझाव

रोजाना कुछ लिखने की आदत डालना एक जरूरी कदम है, जो आपके विचारों को साफ करने और मानसिक शांति देने में मदद करता है। यह आदत न केवल आपके लिखने की क्षमता को सुधारती है, बल्कि आपको अपने जीवन के अनुभवों को बेहतर तरीके से समझने में भी मदद करती है। इस लेख में हम आपको कुछ सरल और प्रभावी तरीके बताएंगे, जिनसे आप रोजाना कुछ लिखने की आदत डाल सकते हैं और इसे बनाए रख सकते हैं।

सुबह का समय चुनें : लिखने के लिए सुबह का समय सबसे अच्छा होता है, जब आपका मन ताजा होता है और कोई भी काम करने की ऊर्जा भरपूर होती है। सुबह उठते ही नाश्ते से पहले या बाद में कुछ मिनट निकालकर लिखने की आदत डालें। इससे आपका दिन सही दिशा में शुरू होगा और आप पूरे दिन ऊर्जावान महसूस करेंगे। नियमितता से लिखने की आदत डालने के लिए सुबह का समय सबसे उपयुक्त है।

छोटी-छोटी शुरुआत करें : किसी भी आदत को शुरू करने के लिए सबसे पहले छोटी-छोटी शुरुआत करना जरूरी होता है। शुरुआत में केवल 5-10 मिनट तक ही लिखें और धीरे-धीरे समय बढ़ाएं। इससे आदत बनाने में आसानी होगी और आप इसे लंबे समय तक बनाए रख सकेंगे। छोटी शुरुआत करने से मनोबल भी बना रहता है और आप इसे नियमित रूप से करने के लिए प्रेरित रहते हैं। इस तरह आप बिना किसी दबाव के अपनी लिखने की आदत को विकसित कर सकते हैं।

एक डायरी रखें : अपने विचारों और अनुभवों को नोट करने के लिए हमेशा एक डायरी अपने पास रखें। इससे आप कहीं भी, कभी भी अपने विचारों को आसानी से लिख सकते हैं। डायरी का इस्तेमाल करने से आपके पास एक ऐसा स्थान होगा, जहां आप अपने सभी विचारों को एक जगह पर संकलित कर सकते हैं। इसके अलावा यह लिखने की आदत को नियमित बनाए रखने में मदद करेगा। इस तरह से आप लिखने की प्रक्रिया को और भी बेहतर बना सकते हैं।

विषय चुनें : लिखने के लिए विषय चुनना बहुत जरूरी होता है, ताकि आपको सोचने में मुश्किल न हो। आप अपने जीवन के अनुभव, यात्रा, किताबें या कोई भी ऐसा विषय चुन सकते हैं, जो आपको पसंद हो। विषय चुनने से आपका ध्यान केंद्रित रहेगा और आप बेहतर तरीके से लिख पाएंगे। इसके अलावा एक ही विषय पर लगातार लिखने से आपकी लिखने की क्षमता भी बढ़ेगी और आप अपने विचारों को साफ तरीके से व्यक्त कर सकेंगे।

एक दिन में कितना प्याज खाना चाहिए ?

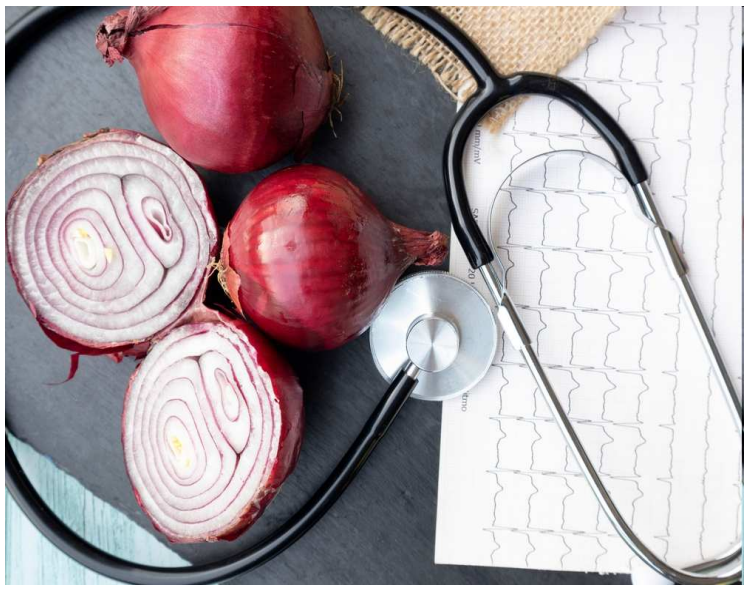

प्याज सबसे पुरानी सब्जियों में से एक है जिसे सदियों से उगाया जाता है।प्याज की सबसे खास बात यह है कि यह लगभग हर खाने की रेसिपी में डाला जाता है। सब्जी से लेकर कोई भी मसालेदार खाने वाली चीज में प्याज का इस्तेमाल किया जाता है। वहीं आपकी जानकारी के लिए बता दें कि कच्चा प्याज खाने के कई सारे साइडइफेक्ट्स होते हैं। साथ ही आपको बताएंगे एक दिन में कितना प्याज खाना है जरूरी।

पाचन संबंधी परेशानी

कच्चा प्याज खाने से कुछ व्यक्तियों के लिए पाचन संबंधी परेशानी का कारण बन सकता है। फ्रुक्टेन एक प्रकार का कार्बोहाइड्रेट होता है। जिसके कारण इसे पचाने में दिक्कत होती है। इससे गैस, सूजन और पेट की परेशानी हो सकती है। संवेदनशील पेट या पाचन संबंधी समस्याओं वाले लोग इन लक्षणों से बचने के लिए कच्चा प्याज लीमिट में खाना चाहिए।

मुंह की बदबू

कच्चा प्याज खाने से सांस की भयानक दुर्गंध होती है। प्याज में पाए जाने वाले मजबूत सल्फर केमिकल गंध छोड़ता है। जो घंटों तक बनी रह सकती है। हालांकि अपने दांतों को ब्रश करने और माउथवॉश का उपयोग करने से मदद मिल सकती है, लेकिन शक्तिशाली सुगंध को पूरी तरह से खत्म करना चुनौतीपूर्ण हो सकता है।

एलर्जी

कुछ लोगों को कच्चे प्याज से एलर्जी का महसूस हो सकता है। हल्की खुजली और सूजन से लेकर सांस लेने में कठिनाई जैसी गंभीर प्रतिक्रियाओं तक हो सकते हैं। यदि आपको प्याज खाने से एलर्जी महसूस होता है तो आपको तुरंत डॉक्टर से संपर्क करना चाहिए।

सीने में जलन

कुछ लोगों को कच्चा प्याज खाने से सीने में जलन हो सकती है या एसिड रिफ्लक्स भी हो सकती है। प्याज में पाई जाने वाली एसोफैगल स्फिंक्टर जो सीने की जलन को शांत कर सकता है। और पेट में पाए जाने वाला एसिड वापस एसोफैगस में जा सकता है। जिन लोगों को सीने में जलन की शिकायत हो उन्हें कच्चा प्याज कम खाना चाहिए। खासकर रात में सोते वक्त।

माइग्रेन को ट्रिगर करता है

कुछ व्यक्तियों के लिए कच्चा प्याज खाने से माइग्रेन ट्रिगर कर सकता है। प्याज में टायरामाइन होता है जो सिरदर्द ट्रिगर कर सकता हैं। यदि आप माइग्रेन से ग्रस्त हैं, तो सलाह दी जाती है कि आप कच्चा प्याज सावधानी के साथ खाएं।

इन लोगों को कच्चा प्याज ज्यादा नहीं खाना चाहिए

जो लोग हार्ट, बीपी या डायबिटीज की दवा खाते हैं उन्हें ज्यादा मात्रा में कच्चा प्याज नहीं खाना चाहिए। इससे उनकी शारीरिक परेशानी बढ़ सकती है।

सब्जी में भी 1.2 प्याज डालना चाहिए। इससे ज्यादा प्याज खाना शरीर के लिए नुकसानदायक साबित हो सकता है।

शब्द सामर्थ्य -068

(भागवत साहू)

बाएं से दाएं

1. राजद प्रमुख 6. रखवाला, रक्षा करने वाला 7. दयालु, रहम करने वाला (उ.) 10. युग्म, जोड़ा, एक राशि, एक फिल्म अभिनेता 13. कैदखाना, जेल, हिरासत 15. जानकी, जनकनंदनी 17. व्यर्थ की बात, बकबक 18. नारी, स्त्री, महिला 21. विक्रय करना 22. वाणी, कथन, वादा 24. ताश में दस अंकों वाला पत्ता 25. नगर का, नागरिक, चतुर।

ऊपर से नीचे

1. बेफ्रिक, निश्चिंत, जिसे कोई परवाह न हो 2. मूर्ति 3. दोस्त, प्रेमी 4. कुशल, विशेषज्ञ 5. बगुला 8. झुका हुआ, झुकाया गया, नत 9. इधर-उधर, पास पड़ोस 11. किस्मत, तकदीर, भाग्य 14. बंदर, मर्कट, कपि 16. शक्तिशाली, बलवान 18. संतान, संतति 19. अस्तबल, घुड़साल 20. राजी करना, रूठे हुए को प्रसन्न करना 23. सरिता, नदिया, नद।

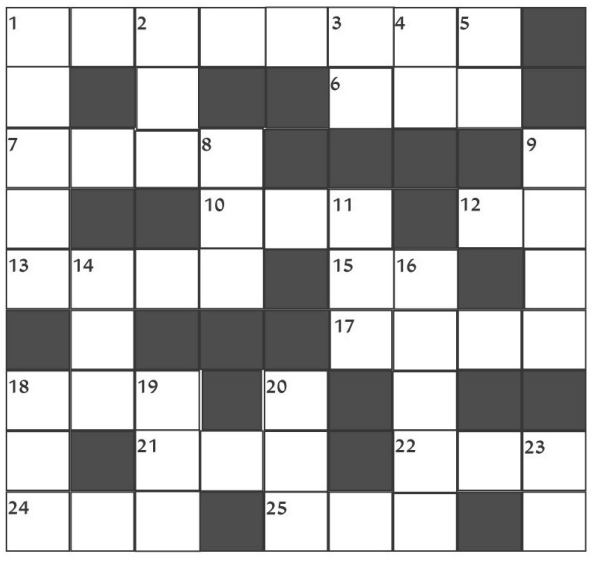

शब्द सामर्थ्य क्रमांक 67 का हल

मा	म	ला	■	सि	वा	य	■	कि
लि	■	चा	ह	त	■	म	म	ता
क	सू	र	■	म	ग	न	■	ब
■	र	■	■	■	द	■	■	■
क	मा	न	■	पा	र	स	■	स
मी	■	म	जा	ल	■	न	क	ली
ना	दा	न	■	ना	र	द	■	का
■	मि	■	■	■	तौं	■	■	■
सु	नी	ल	■	अ	धी	र	■	जी

बादशाह से अलगाव के बाद ईशा रिखी ने चुना नया रास्ता!

मशहूर रैपर बादशाह से अलग होने के बाद अभिनेत्री ईशा रिखी की जिंदगी में एक बड़ा बदलाव देखने को मिल रहा है। अपनी निजी जिंदगी को हमेशा लोगों की नजरों से दूर रखने वाली ईशा अब बिग बॉस 20' के घर में अपने बारे में खुलकर बात कर रही हैं। अभिनेत्री का कहना है कि वह अब बार-बार अपने अतीत को याद करने के बजाय खुद पर ध्यान देना चाहती हैं और जिंदगी में आगे बढ़ना चाहती हैं।

इसी सोच के साथ ईशा ने बिग बॉस' के घर में जाने का फैसला किया। उन्होंने बताया कि उन्होंने कभी नहीं सोचा था कि वह इस लोकप्रिय कार्यक्रम का हिस्सा बनेंगी।

ईशा ने कहा कि वह हमेशा से बेहद निजी स्वभाव की रही हैं और उन्हें लगता था कि बिग बॉस' का माहौल और तरीका उनकी जिंदगी से बिल्कुल अलग है। इसलिए जब उन्हें कार्यक्रम में शामिल होने का प्रस्ताव मिला तो उन्होंने तुरंत हामी नहीं भरी।

उन्होंने कहा कि प्रस्ताव मिलने के बाद उन्होंने काफी सोच-विचार किया और उन झिझकों पर भी विचार किया, जिनकी वजह से वह इस कार्यक्रम से दूर रहना चाहती थीं। आखिरकार उन्होंने तय किया कि अब डर और हिचक को पीछे छोड़ने का समय आ गया है और उन्होंने शो में जाने का फैसला कर लिया।

ईशा के मुताबिक, जिंदगी में कुछ बड़ा झेलने के बाद ही कई बार इंसान को अपनी असली ताकत का एहसास होता है। उनका कहना है कि अब उन्हें लगता है कि वह बिग बॉस' के घर में खुद को संभाल सकती हैं और वहां टिक सकती हैं।

अभिनेत्री ने कहा कि फिल्मी दुनिया में लंबे समय तक काम करने के कारण उन्हें हमेशा लगता था कि वह बिग बॉस' जैसे कार्यक्रम के लिए उपयुक्त नहीं हैं। हालांकि, धीरे-धीरे उन्हें समझ आया कि अगर इंसान के भीतर आत्मविश्वास है तो जगह मायने नहीं रखती। वह कहीं भी जाकर अपनी पहचान बना सकती हैं।

ईशा ने कहा कि बिग बॉस' उनके लिए लोगों के सामने खुद को अपने तरीके से रखने का एक मौका है। कार्यक्रम का प्रस्ताव मिलने के बाद उनके मन में यह विचार भी आया कि इसके माध्यम से दर्शकों को पता चल सकेगा कि वह असल जिंदगी में कैसी हैं और उनका स्वभाव कैसा है।

उन्होंने कहा कि एक कलाकार के लिए अपनी निजी जिंदगी को निजी रखना आसान नहीं होता। लोगों की राय, चर्चाएं और तरह-तरह की बातें कई बार काम पर भी असर डालती हैं। ईशा ने साफ किया कि उन्होंने हमेशा अपने दिल की सुनी है और कभी किसी दौड़ का हिस्सा बनने की कोशिश नहीं की।

अपनी निजी जिंदगी से जुड़े सवालों पर ईशा ने कहा कि आगे जो भी स्थिति आएगी, वह उसे उसी समय संभालेंगी। वह अब ऐसी बातों पर अपनी ऊर्जा खर्च नहीं करना चाहतीं, जिनके बारे में वह खुद बात नहीं करना चाहतीं।

उन्होंने कहा कि वह हर किसी को सफाई नहीं देंगी और जो बातें साझा नहीं करना चाहतीं, उन्हें अपने तक ही रखेंगी।

बिग बॉस' के घर में होने वाले झगड़ों और विवादों को लेकर ईशा ने कहा कि घर में लड़ाई-झगड़ा होना कोई नई बात नहीं है। असल जिंदगी में भी परिवार और दोस्तों के बीच मतभेद होते हैं। हालांकि, बिग बॉस' के घर में विवाद किस स्तर तक पहुंचेंगे, इसका अंदाजा उन्हें अभी नहीं है।

बिग बॉस 20' में ईशा की एंट्री ऐसे समय हुई है, जब उनकी निजी जिंदगी पहले से ही चर्चा में रही है। बादशाह और ईशा ने हाल ही में आपसी सहमति से अलग होने की जानकारी साझा की थी। दोनों ने लोगों से उनकी निजता का सम्मान करने की अपील भी की थी।

इसके बाद कार्यक्रम में ईशा ने अपने टूटे भरोसे और मुश्किल दौर का जिक्र किया था, हालांकि उन्होंने किसी का नाम नहीं लिया। कार्यक्रम के दौरान सलमान खान ने भी उन्हें पुरानी बातों को पीछे छोड़कर आगे बढ़ने और वर्तमान पर ध्यान केंद्रित करने की सलाह दी।

ईशा रिखी ने अपने अभिनय करियर की शुरुआत पंजाबी सिनेमा से की थी। मॉडलिंग के बाद उन्होंने पंजाबी फिल्मों में काम किया। वह जट्ट बॉयज पुत्त जट्टां दे', हैप्पी गो लकी', मेरे यार कमीने' और अरदास' जैसी फिल्मों में नजर आईं।

इसके बाद वर्ष 2018 में नवाबजादे' के साथ उन्होंने हिंदी फिल्मों में कदम रखा। अब बिग बॉस 20' के जरिए ईशा दर्शकों को अपने व्यक्तित्व के उस पहलू से परिचित कराने की कोशिश कर रही हैं, जिसे उन्होंने अब तक निजी रखा है।

चिरंजीवी की काका' में अनस्वरा राजन की एंट्री!

अभिनेत्री अनस्वरा राजन इन दिनों अपनी आगामी तेलुगु फिल्म काका' को लेकर काफी उत्साहित हैं। मलयालम सिनेमा में अपनी पहचान बना चुकीं अनस्वरा ने तेलुगु फिल्म जगत में अभी केवल एक फिल्म के जरिए कदम रखा है, लेकिन अब उन्हें अभिनेता चिरंजीवी की आगामी फिल्म काका' में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने का मौका मिला है। फिल्म का निर्देशन बॉबी कर रहे हैं।

अनस्वरा ने रोशन की फिल्म चैंपियन' के जरिए तेलुगु सिनेमा में पदार्पण किया था। फिल्म को दर्शकों और समीक्षकों से मिली-जुली प्रतिक्रिया मिली, लेकिन अनस्वरा के अभिनय की काफी सराहना हुई। इसके बाद से ही माना जा रहा था कि तेलुगु फिल्म उद्योग में उनका भविष्य उज्ज्वल हो सकता है।

अब अनस्वरा को चिरंजीवी की फिल्म काका' में अहम भूमिका मिलने से उनके प्रशंसकों में भी उत्साह है। फिल्म की रिलीज से पहले आयोजित एक कार्यक्रम में अभिनेत्री ने चिरंजीवी के साथ काम करने के अनुभव को साझा करते हुए अपनी खुशी जाहिर की।

अनस्वरा ने कहा, मैं चिरंजीवी सर के साथ पर्दा साझा करने को लेकर खुश और गौरवान्वित महसूस कर रही हूं। सेट पर उन्हें देखकर मैंने बहुत कुछ सीखा है।

अभिनेत्री ने आगे कहा कि उन्हें उम्मीद है कि चिरंजीवी के प्रशंसकों समेत दर्शकों को काका' सिनेमाघरों में जरूर पसंद आएगी।

अनस्वरा राजन को उनके करियर के शुरुआती दौर में ही चिरंजीवी जैसे बड़े अभिनेता के साथ काम करने का अवसर मिलने को लेकर फिल्म जगत में भी चर्चा है। कई लोग अभिनेत्री की किस्मत और उनके अब तक के प्रदर्शन की तारीफ कर रहे हैं।

चैंपियन' में उनके अभिनय की सराहना के बाद काका' में महत्वपूर्ण भूमिका मिलना अनस्वरा के लिए तेलुगु सिनेमा में एक बड़ा कदम माना जा रहा है। इस फिल्म के जरिए उन्हें दक्षिण भारतीय दर्शकों के बड़े वर्ग तक पहुंचने का अवसर मिलेगा।

अनस्वरा की लोकप्रियता और चिरंजीवी के साथ उनकी आगामी फिल्म को देखते हुए माना जा रहा है कि काका' की सफलता उनके तेलुगु फिल्म करियर के लिए महत्वपूर्ण साबित हो सकती है। फिल्म के प्रदर्शन के बाद उन्हें तेलुगु सिनेमा में और भी बड़ी फिल्मों के प्रस्ताव मिलने की उम्मीद है।

फिलहाल अनस्वरा काका' की रिलीज को लेकर उत्साहित हैं और उन्हें भरोसा है कि फिल्म में चिरंजीवी के साथ उनका काम दर्शकों को पसंद आएगा।

रजनीकांत की धर्मन' की शूटिंग का दूसरा शेड्यूल पूरा

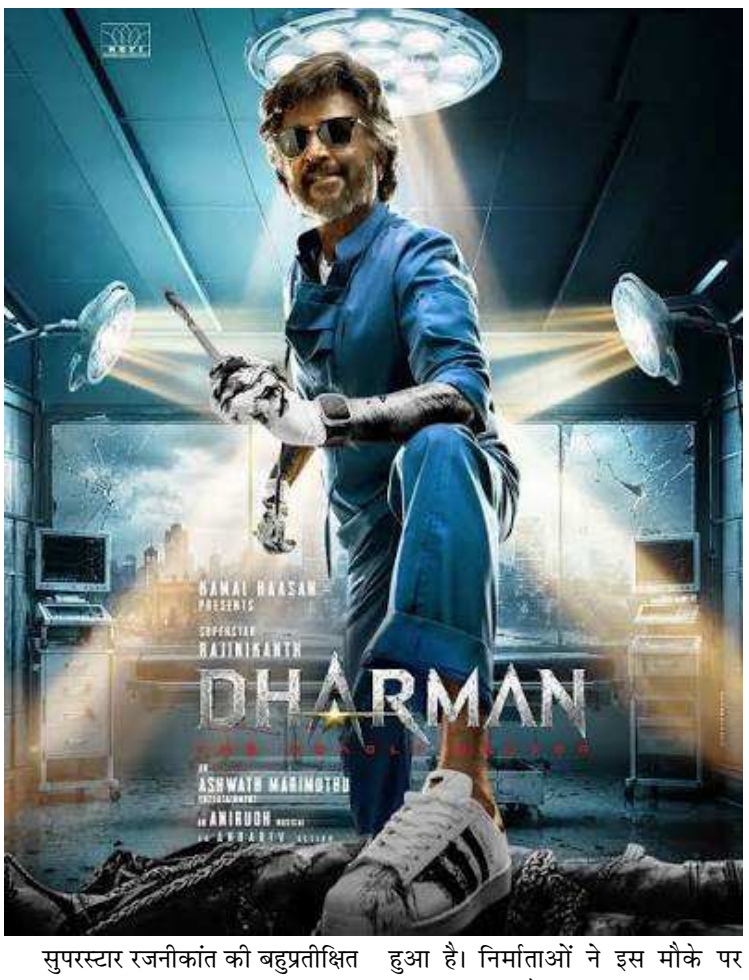

सुपरस्टार रजनीकांत की बहुप्रतीक्षित तमिल फिल्म धर्मन' का निर्माण कार्य तेजी से आगे बढ़ रहा है। निर्देशक अश्वथ मारिमुथु के निर्देशन में बन रही फिल्म की शूटिंग का दूसरा चरण हाल ही में पूरा हुआ है। निर्माताओं ने इस मौके पर रजनीकांत की मौजूदगी वाला एक विशेष वीडियो जारी किया है, जिसे प्रशंसकों की ओर से अच्छी प्रतिक्रिया मिल रही है।

फिल्म के शीर्षक और प्रथम झलक वाले पोस्टर को पहले ही जबरदस्त प्रतिक्रिया मिल चुकी है। पोस्टर में रजनीकांत के किरदार धर्मन' को द डेडली डॉक्टर' यानी घातक डॉक्टर' की दिलचस्प पहचान के साथ पेश किया गया है। इस टैगलाइन ने फिल्म की कहानी और रजनीकांत के किरदार को लेकर दर्शकों की उत्सुकता बढ़ा दी है। शूटिंग का दूसरा चरण पूरा होने के बाद जारी किए गए वीडियो में रजनीकांत की शानदार मौजूदगी देखने को मिली है। फिल्म के निर्माण कार्य में तेजी आने के साथ ही यह परियोजना तमिल सिनेमा की बहुप्रतीक्षित फिल्मों में शामिल होती जा रही है। निर्माताओं ने फिल्म की कहानी से जुड़ी ज्यादा जानकारी अभी साझा नहीं की है, लेकिन प्रथम झलक और रजनीकांत के किरदार के परिचय ने फिल्म को लेकर दर्शकों के बीच काफी उत्सुकता पैदा कर दी है। धर्मन' की सबसे खास बात यह है कि यह लंबे समय से दोस्त रहे दिग्गज अभिनेता रजनीकांत और कमल हासन को एक परियोजना के लिए साथ ला रही है। कमल हासन और आर. महेंद्रन द्वारा राज कमल फिल्म्स इंटरनेशनल के बैनर तले फिल्म का निर्माण किया जा रहा है। यह फिल्म राज कमल फिल्म्स इंटरनेशनल के साथ रजनीकांत की पहली अभिनय परियोजना है। ऐसे में दोनों दिग्गजों का यह सहयोग फिल्म को और खास बना रहा है।

दो माह में ही उखड़ा पुराने हरिद्वार मार्ग का डामर!

कोटद्वार (आरएनएस)। डिग्री कॉलेज-कण्वाश्रम मार्ग (पुराना हरिद्वार रोड) का डामरीकरण होने के महज दो माह बाद ही सड़क की हालत फिर खराब हो गई है। कई स्थानों पर डामर उखड़ने से गहरे गड्ढे हो गए हैं। इससे स्थानीय लोगों के साथ ही डिग्री कॉलेज के छात्र-छात्राओं को भी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। सड़क की गुणवत्ता को लेकर सवाल उठने लगे हैं। लोनिवि दुगड्डा ने जून में करीब 1.28 करोड़ की लागत से 8.1० किमी मार्ग का डामरीकरण कराया था। इससे पहले जनवरी में आयोजित बर्ड फेस्टिवल के दौरान मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने मार्ग के डामरीकरण कार्य का शिलान्यास किया था। बरसात शुरू होने के बाद कई जगह डामर उखड़ गया और सड़क फिर बदहाल हो गई। शिवपुर निवासी सामाजिक कार्यकर्ता दिनेश जुयाल ने सड़क की स्थिति पर नाराजगी जताते हुए मार्ग का दोबारा डामरीकरण कराने की मांग की है। उनका कहना है कि कम समय में ही सड़क के क्षतिग्रस्त होने से सरकारी धन के उपयोग पर सवाल उठ रहे हैं। सड़क वर्ष 2०17 में पीएमजीएसवाई सिंचाई खंड कोटद्वार ने डिग्री कॉलेज कण्वाश्रम मार्ग का डामरीकरण कराया था। इसके बाद ध्रुवपुर में सुखरो नदी पर करीब 4.6० करोड़ की लागत से 9० मीटर स्पान पुल और सत्तीचौड़ में ग्वालगढ़ गदेरे पर करीब 1.77 लाख की लागत से 3० मीटर डबल लेन स्पान पुल का निर्माण कराया। मार्ग बनने से शिवपुर, लालपुर, ध्रुवपुर, सत्तीचौड़, मवाकोट, कोठला और भाबर के कलालघाटी क्षेत्र के लोगों को आवाजाही में सुविधा मिली।

सीवर लाइन क्षतिग्रस्त, आठ सरकारी आवासों के लोग परेशान

उत्तरकाशी(आरएनएस)। जिला चिकित्सालय परिसर में निर्माणाधीन 5० बेड के क्रिटिकल केयर यूनिट के समीप स्थित आवासों की सीवर लाइन और नाली क्षतिग्रस्त होने से आठ परिवारों की परेशानी बढ़ गई है। सीवर निकासी बाधित होने के कारण आवासीय परिसर में गंदा पानी जमा हो रहा है। वहीं, लगातार दुर्गंध उठने से कर्मचारियों और उनके परिजनों को दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है। समस्या के समाधान की मांग को लेकर चिकित्सा स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण महासंघ के जिलाध्यक्ष जोगेंद्र सिंह पडियार और महासचिव गिरीश उनियाल ने मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ. श्याम विजय सिंह तथा जिला चिकित्सालय के प्रमुख अधीक्षक डॉ. बीएस रावत को ज्ञापन सौंपा। महासंघ के जिलाध्यक्ष जोगेंद्र सिंह पडियार ने बताया कि सीसीयू निर्माण कार्य के चलते राजकीय आवासों की सीवर लाइन और नाली क्षतिग्रस्त हो गई है। महासचिव गिरीश उनियाल ने सीवर लाइन और नाली की स्थायी मरम्मत कराने के साथ तब तक तत्काल वैकल्पिक निकासी व्यवस्था उपलब्ध कराने की मांग की। इस मौके पर मनोज नौटियाल, रमा चौहान, मीना राणा, आकाश और अंकित चौहान आदि शामिल रहे।

सू- दोकू क्र.068

		3					7	
9				6		3		8
	7		9		5		6	
						1		9
3		8		7			5	
	1		3		9			7
		2		8		7		
	8				2		4	3
			1					

नियम

1. कुल 81 वर्ग है,जिसमें 9वर्गो का एक खंड बनता है।
2. हर खाली वर्ग में 1से 9 के बीच का कोई एक अंक र सकते है।
3. बाएं से दाएं और उपर से नीचे के प्रत्येक कालम,कतार और खंड में 1से9अंक में से किसी भी अंक का इस्तेमाल एक बार ही कर सकते है।

सू-दोकू क्र.67 का हल

5	2	4	9	6	7	8	1	3
3	6	7	4	1	8	2	9	5
8	1	9	3	2	5	4	6	7
6	3	5	1	9	4	7	2	8
7	9	8	5	3	2	6	4	1
2	4	1	7	8	6	5	3	9
4	5	3	6	7	9	1	8	2
9	8	6	2	5	1	3	7	4
1	7	2	8	4	3	9	5	6

कुंभ मेला-2027 की तैयारियों को लेकर मुख्य सचिव ने निर्माण स्थलों का किया स्थलीय निरीक्षण

हरिद्वार(आरएनएस)। कुंभ मेला-2027 की तैयारियों को धरातल पर परखने के लिए मुख्य सचिव उत्तराखण्ड शासन आनंद वर्द्धन ने हरिद्वार में विभिन्न निर्माण स्थलों का व्यापक स्थलीय निरीक्षण किया। मुख्य सचिव ने अधिकारियों के साथ अरबेनिया वाहन में बैठकर रोड़ी-बेलवाला से लेकर रोशनाबाद होते हुए कनखल-दक्षद्वीप-बैरागी कैंप से लेकर सीसीआर टावर तक एक निर्माण स्थल से दूसरे निर्माण स्थल तक पहुंचकर मौके पर चल रहे कार्यों की प्रगति, गुणवत्ता, तकनीकी पहलुओं, उपयोगिता तथा निर्धारित समयसीमा की जानकारी ली। इस दौरान उन्होंने निर्माण कार्यों के साथ ही मेले के दौरान श्रद्धालुओं के लिए प्रस्तावित सुविधाओं और व्यवस्थाओं को भी मौके पर परखा।

मुख्य सचिव ने स्पष्ट निर्देश दिए कि कुंभ मेला-2027 से संबंधित सभी निर्माण कार्य निर्धारित समयसीमा में पूरे किए जाएं और गुणवत्ता से किसी भी स्तर पर समझौता न हो। उन्होंने कहा कि कार्यों की नियमित समीक्षा और स्थलीय निगरानी के साथ उन परियोजनाओं पर विशेष ध्यान दिया जाए, जिनकी गति अपेक्षा के अनुरूप नहीं है। कार्यों में आने वाली बाधाओं की तत्काल पहचान कर उनका समाधान सुनिश्चित करने तथा विभागों और कार्यदायी संस्थाओं के बीच बेहतर समन्वय के साथ निर्माण कार्यों में तेजी लाने के निर्देश दिए।उन्होंने कहा कि कुंभ मेला-2027 में देश-विदेश से बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं के हरिद्वार पहुंचने की संभावना है। ऐसे में सड़क, पुल, पैदल मार्ग, पेयजल, स्वास्थ्य, पार्किंग, प्रशासनिक एवं अन्य आधारभूत सुविधाओं से जुड़े सभी कार्य समय से पूरे होना आवश्यक है। निर्माण के दौरान आमजन और स्थानीय नागरिकों की सुविधा, यातायात व्यवस्था तथा सुरक्षा मानकों का भी पूरा ध्यान रखा जाए।

मुख्य सचिव ने रोड़ी-बेलवाला क्षेत्र में उत्तराखण्ड निवेश एवं अवस्थापना विकास बोर्ड (यूआईआईडीबी) की प्रशासनिक मार्ग परियोजना तथा रोड़ी-बेलवाला एवं हरकी पैड़ी क्षेत्र की पुनर्विकास परियोजनाओं का निरीक्षण किया। उन्होंने परियोजनाओं को तत्परता से पूरा करने के साथ श्रद्धालुओं की सुविधा और सुरक्षा के अनुरूप उच्च स्तरीय व्यवस्थाएं सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि परियोजनाओं से निर्मित परिसंपत्तियों एवं विकसित व्यवस्थाओं के पांच वर्ष की अनुबंध अवधि पूरी होने के बाद उनके स्थायी रख-रखाव की जिम्मेदारी संबंधित विभाग अथवा निकाय को सौंपने की व्यवस्था अभी से सुनिश्चित की जाए। उन्होंने मेलाधिकारी को इस संबंध में संबंधित विभागों के उच्चाधिकारियों के साथ प्रस्तावित व्यवस्था का औपचारिक मसौदा शासन की स्वीकृति के लिए भेजने के निर्देश दिए।उन्होंने हाथीपुल से अलकनंदा के मध्य घाटों के पुनर्निर्माण एवं सुधार कार्यों का भी जायजा लिया। घाटों पर श्रद्धालुओं की सुरक्षा के लिए मजबूत रेलिंग और चेन की समुचित व्यवस्था करने तथा पैदल आवागमन को सुगम बनाने के निर्देश दिए। प्रशासनिक मार्ग निर्माण के लिए शासन द्वारा ?4325.14 लाख तथा हरकी पैड़ी रिवाइटलाइजेशन कार्य के लिए ?6677.21 लाख की धनराशि स्वीकृत है।

ऋषिकुल क्षेत्र में मुख्य सचिव ने ओल्ड दिल्ली-नीतिपास मार्ग के नवीनीकरण कार्य का निरीक्षण किया। उन्होंने यातायात एवं स्थानीय आवागमन को ध्यान में रखते हुए कार्य के दौरान आवश्यक व्यवस्थाएं सुनिश्चित करने तथा सड़क किनारे विकसित किए जा रहे फुटपाथ एवं अन्य उपयुक्त स्थानों पर पौधरोपण कर हरियाली विकसित करने पर जोर दिया। दूधाधारी चौक से ज्वालापुर तक के हिस्से सहित लोक निर्माण विभाग के अधीन शहर की अन्य आंतरिक सड़कों के नवीनीकरण के लिए ?2164.49 लाख की धनराशि स्वीकृत है।इसके बाद मुख्य सचिव ने शिवमूर्ति चौक, शंकर आश्रम चौक तथा भगत सिंह चौक से विल्केश्वर तक चौराहों के सुधार एवं पैडेस्ट्रीयन फुटपाथ कार्य का निरीक्षण किया। ?683.6० लाख की लागत वाले इस कार्य में पैदल यात्रियों की सुविधा, सुरक्षित आवागमन और यातायात के सुचारु संचालन को प्राथमिकता देने के निर्देश दिए गए।

रोशनाबाद में मुख्य सचिव ने ?251.98 लाख की लागत से निर्माणाधीन ड्रग वेयरहाउस का निरीक्षण किया। उन्होंने स्वास्थ्य सेवाओं से जुड़ी इस महत्वपूर्ण परियोजना को निर्धारित समयसीमा में पूरा करने के निर्देश दिए।

नंदादेवी मेले में स्वर्गीय दीवान कनवाल के नाम से आयोजित होगी गायन प्रतियोगिता

अल्मोड़ा(आरएनएस)। मां नंदा देवी मेला-2026 के तहत आयोजित होने वाली पारंपरिक गायन प्रतियोगिता इस वर्ष से अल्मोड़ा के वरिष्ठ रंगकर्मी एवं प्रख्यात सांस्कृतिक व्यक्तित्व स्वर्गीय दीवान कनवाल की स्मृति को समर्पित की जाएगी। मां नंदा देवी मंदिर समिति ने निर्णय लिया है कि अब यह प्रतियोगिता प्रतिवर्ष %स्वर्गीय दीवान कनवाल गायन प्रतियोगिता% के नाम से आयोजित की जाएगी। समिति के अनुसार 23 अगस्त को मां नंदा देवी मंदिर प्रांगण में आयोजित ऑडिशन में चयनित प्रतिभागियों का विशेष प्रशिक्षण 5 सितंबर से शुरू हो चुका है। लगभग 1० दिनों तक चलने वाले इस प्रशिक्षण में प्रतिभागियों को मंच प्रस्तुति, गायन कौशल और प्रतियोगिता की तैयारी कराई जा रही है। 21 सितंबर को मां नंदा देवी मंदिर प्रांगण में गायन प्रतियोगिता का फाइनल आयोजित किया जाएगा। मुख्य संयोजक तारा चन्द्र जोशी ने कहा कि प्रतियोगिता में शामिल सभी प्रतिभागी नगर के उभरते हुए गायक हैं। मंदिर समिति का उद्देश्य स्थानीय प्रतिभाओं को बेहतर मंच उपलब्ध कराना है, ताकि वे अपनी कला को निखारकर आगे बढ़ सकें। उन्होंने कहा कि स्वर्गीय दीवान कनवाल की स्मृति में प्रतियोगिता आयोजित करना उनके सांस्कृतिक योगदान के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि है। मुख्य सांस्कृतिक संयोजक अर्जुन सिंह बिष्ट ने बताया कि प्रतिभागियों को विशेषज्ञों द्वारा विशेष प्रशिक्षण देकर प्रतियोगिता के लिए तैयार किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि इस मंच से अपनी गायन यात्रा शुरू करने वाले कई कलाकार आगे चलकर अल्मोड़ा का नाम रोशन कर चुके हैं। स्वर्गीय दीवान कनवाल की स्मृति में प्रतियोगिता का आयोजन नई पीढ़ी को उनकी सांस्कृतिक विरासत से जोड़ने की सार्थक पहल है। प्रशिक्षण सत्र के दौरान तारा चन्द्र जोशी, अर्जुन सिंह बिष्ट, संगीत निर्देशक दीपक रावत, अरशद अंसारी, पंकज कुमार, रोशन बनौला, साहिल कुमार, विशाल बोरा सहित प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे प्रतिभागी और उनके अभिभावक उपस्थित रहे।

छात्र संख्या शून्य होने से टिहरी के 25 विद्यालयों में ताले लगे

नई टिहरी(आरएनएस)। सरकारी स्कूलों के प्रति अभिभावकों के घटते रुझान के कारण जिले में इस शिक्षा सत्र में 25 सरकारी स्कूलों में छात्र संख्या शून्य होने से ताला लग गया है। बच्चों की चहल-कदमी से गुलजार रहने वाले विद्यालयों में अब सन्नाटा पसरा है।

सरकारी स्कूलों को बचाने के लिए सरकार की ओर से कई योजनाएं संचालित की जा रही है लेकिन ये योजनाएं भी स्कूलों को बचाए में रखने में काम नहीं आ पा रही है। अभिभावक अपने बच्चों को सरकारी स्कूलों से हटाकर निजी स्कूलों में दाखिला करवा रहें हैं। प्रत्येक वर्ष छात्रों की संख्या शून्य होने के कारण सरकारी स्कूल बंद हो रहे हैं।

सरकार के लिए सरकारी विद्यालयों को बचाना चुनौती पूर्ण बनता जा रहा है। नए शिक्षा सत्र शुरू होने के बाद टिहरी जिला शिक्षा विभाग के आंकड़ों के मुताबिक प्राथमिक, उच्च प्राथमिक और जूनियर हाईस्कूल विद्यालयों में छात्र संख्या शून्य होने के कारण उन्हें बंद करना पड़ा जिसमें 2० प्राथमिक विद्यालय (पीएस), 4 जूनियर हाईस्कूल (जेएच), 1 उच्च प्राथमिक स्कूल (यूपीएस) व जीआईसी नरेंद्रनगर में केंद्रीय विद्यालय खुलने से उसे दूसरे विद्यालय में समायोजित कर दिया गया है।

चंबा ब्लॉक में पीएस चमोगी, गौसारी, कुल्पी, जेएच मठियाण गांव, देवप्रयाग में यूपीएस धर्मनगर बगवान, पीएस बुडोकोट, डांडा किरोड़, डोब, भिलंगना में पीएस तोड़खंड, सरूणा, कोटगा, जाखणीधार में पीएस सांदणा, बुरांट, जौनपुर में जेएच किमोली,पीएस वनगांव, थौलधार में पीएस बमराड़ी, विकोल, प्रतापनगर में पीएस कोलधार,सुकरी, कीर्तिनगर में जेएच हरडाखाल, पीएस लूसी, थापली, नरेंद्रनगर जेएच कुखई, पीएस नैल में छात्र संख्या शून्य होने से ताला लटक गया है। इसके अलावा जीआईसी नरेंद्रनगर में केंद्रीय विद्यालय खुलने से उसे दूसरे में समायोजित कर दिया गया है।

मामूली बात पर बेटे ने पिता के सिर पर डंडे से वार कर की हत्या

हमारे संवाददाता

हरिद्वार। चंडी घाट बस्ती में एक दिल दहला देने वाली वारदात सामने आई है। घरेलू काम को लेकर हुए मामूली विवाद में बड़े बेटे ने अपने ही पिता के सिर पर डंडे से हमला कर दिया। गंभीर रूप से घायल पिता की आज सुबह अस्पताल में इलाज के दौरान मौत हो गई। पुलिस ने त्वरित कार्रवाई करते हुए आरोपी बेटे को हिरासत में ले लिया है। जानकारी के अनुसार, घटना शुक्रवार देर शाम की है। चंडी घाट बस्ती में 60 वर्षीय प्यारे अपने छोटे बेटे के साथ रात का खाना बना रहे थे। उसी दौरान किसी काम को लेकर प्यारे की अपने बड़े बेटे प्रकाश (27 वर्ष) से कहासुनी हो गई। देखते ही देखते विवाद इतना बढ़ गया कि आपा खो चुके प्रकाश ने पिता प्यारे के सिर पर डंडे से ताबड़तोड़ वार कर दिया। सिर पर गंभीर चोट लगने के कारण प्यारे लहूलुहान होकर मौके पर ही गिर पड़े। जिन्हे अस्पताल पहुंचाया गया जहां आज सुबह उपचार के दौरान उन्होंने दम तोड़ दिया। घटना की सूचना मिलते ही पुलिस टीम मौके पर पहुंची और शव को कब्जे में लेकर आगे की वैधानिक कार्रवाई शुरू कर दी। पुलिस ने आरोपी बेटे प्रकाश को पकड़ लिया है और उससे पूछताछ की जा रही है।

दो सगे भाई 6 माह के लिए किये जिला बदर

हमारे संवाददाता

नैनीताल। कानून एवं शांति व्यवस्था बनाए रखने और आपराधिक गतिविधियों पर प्रभावी अंकुश लगाने के लिए जिला प्रशासन ने दो सगे भाईयों के खिलाफ बड़ी निरोधात्मक कार्रवाई की है। जिला मजिस्ट्रेट नैनीताल ललित मोहन रयाल के न्यायालय ने गुंडा नियंत्रण अधिनियम के तहत राजू सागर और पूरन सागर को छह माह के लिए जनपद नैनीताल की सीमा से निष्कासित करने के आदेश जारी किए हैं। प्राप्त जानकारी के अनुसार राजू सागर पुत्र स्व. रामकुमार, निवासी नाथूपुर पाडली, लामाचौड़, थाना मुखानी के विरुद्ध आबकारी अधिनियम के तहत सात प्रकरण तथा गुंडा नियंत्रण अधिनियम के तहत एक प्रकरण दर्ज है। वहीं पूरन सागर पुत्र स्व. रामकुमार, निवासी नाथूपुर पाडली, लामाचौड़, थाना मुखानी के विरुद्ध आबकारी अधिनियम के तहत चार प्रकरण दर्ज हैं। इसके अलावा उनके खिलाफ भारतीय दंड संहिता की धारा 323, 504 और 506 के तहत भी एक प्रकरण दर्ज है। जिन्हे छह माह के लिए जिलाबदर कर दिया गया है।

दूसरे दिन भी अवैध अतिक्रमण पर चला पीला पंजा

हमारे संवाददाता

हरिद्वार। शहर में यातायात व्यवस्था को सुचारु बनाए रखने और सार्वजनिक मार्गों को अतिक्रमणमुक्त करने एवं आगामी कुंभ मेले को सुव्यवस्थित ढंग से संचालित करने के उद्देश्य से जिला प्रशासन की ओर से अवैध अतिक्रमण के खिलाफ अभियान तेज कर दिया गया है। जिलाधिकारी मयूर दीक्षित के निर्देशन में आज दूसरे दिन भी नगर मजिस्ट्रेट हर गिरि के नेतृत्व में प्रशासनिक टीम ने बाल्मीकि चौक से लेकर शिवमूर्ति चौक तक व्यापक अतिक्रमण हटाओ अभियान चलाया। अभियान के दौरान सड़क किनारे,फुटपाथ और सार्वजनिक स्थानों पर किए गए अवैध अतिक्रमण को हटाया गया। जिला प्रशासन की इस कार्रवाई से क्षेत्र में अवैध रूप से दुकानें सजाने, सड़क एवं फुटपाथ पर सामान रखने तथा सार्वजनिक स्थानों पर कब्जा करने वाले लोगों में हड़कंप की स्थिति बनी रही। प्रशासनिक टीम के पहुंचते ही कई अतिक्रमणकारियों ने स्वयं ही अपना सामान समेटना शुरू कर दिया, जबकि जहां अतिक्रमण नहीं हटाया गया, वहां प्रशासन की टीम ने सख्ती दिखाते हुए अतिक्रमण को हटाया। नगर मजिस्ट्रेट हर गिरि के नेतृत्व में चलाए गए अभियान के दौरान प्रशासन ने स्पष्ट संदेश दिया कि सार्वजनिक मार्गों और सरकारी भूमि पर किसी भी प्रकार का अवैध कब्जा बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। अधिकारियों ने अतिक्रमणकारियों को भविष्य में दोबारा अतिक्रमण न करने की चेतावनी भी दी।

कांग्रेस को लगा 'सियासी' नेत्र रोग..

◀◀ पृष्ठ 2 का शेष

व्यक्ति तक पहुंचाने पर जोर दे रही है। पार्टी का दावा है कि उसकी राजनीति का लक्ष्य विपक्ष की लकीर छोटी करना नहीं, बल्कि अपनी लकीर इतनी बड़ी करना है कि विरोधियों के आरोप उसके सामने बौने साबित हों। सियासी संदेश साफ है- कांग्रेस जहां सरकार के काम पर सवालों की रोशनी डाल रही है, वहीं भाजपा जनता के बीच विकास के कामों की तस्वीर लेकर जाने की तैयारी में है। अब असली परीक्षा इस बात की होगी कि 2027 की चुनावी चौखट पर जनता को किसकी तस्वीर ज्यादा साफ दिखाई देती है कि विपक्ष के सवालों की या सत्ता के विकास दावों की।

उत्तराखंड की सियासत के गढ़ में...

◀◀ पृष्ठ 2 का शेष

असली परीक्षा उसे टिकाए रखने की है। छात्रसंघ चुनाव में जीत हासिल करना एक उपलब्धि हो सकती है, लेकिन उसे विधानसभा चुनाव तक राजनीतिक ऊर्जा में बदलना अलग चुनौती है। 2027 की सियासत में बेरोजगारी, भर्ती, पलायन, शिक्षा और युवाओं की भागीदारी जैसे मुद्दे निर्णायक हो सकते हैं। ऐसे में एनएसयूआई कांग्रेस के लिए युवा असंतोष को राजनीतिक संगठन में बदलने का सबसे महत्वपूर्ण माध्यम बन सकती है। उत्तराखंड की राजनीति में सत्ता का रास्ता भले ही विधानसभा से होकर गुजरता हो, लेकिन उस रास्ते की पहली राजनीतिक सीढ़ी विश्वविद्यालय और महाविद्यालयों के परिसर भी बन सकते हैं और कांग्रेस ने शायद इसी सियासी गणित को पढ़ते हुए छात्र राजनीति के मैदान में अपना झंडा पहले ही गाड़ने की तैयारी शुरू कर दी है।

प्यार में धोखा देना जान पर पड़ा भारी , प्रेमिका ने 5 लाख में दी प्रेमी की हत्या की सुपारी

संवाददाता

देहरादून। प्यार में धोखा देने पर प्रेमिका ने बैंक कर्मी की फिरौती दी थी। पुलिस ने प्रेमिका को उसके साथी के साथ गिरफ्तार कर उनको न्यायालय में पेश किया जहां से उनको न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया।

आज यहां इसकी जानकारी देते हुए एसपी अपराध जितेन्द्र चौधरी ने बताया कि साक्षी चौहान पुत्री स्व. अशोक कुमार निवासी डीएसपी चौक बड़ोवाला थाना पटेलनगर द्वारा कोतवाली पटेलनगर जनपद देहरादून पर आकर तहरीर दी गयी कि वह तथा उनका फुफेरा भाई सत्यम कुमार पुत्र स्व. नौभार सिंह निवासी भगवानवाला थाना धामपुर जिला बिजनौर उत्तर प्रदेश हाल पता डीएसपी चौक बड़ोवाला थाना पटेल नगर देहरादून आज दिनांक 08 सितम्बर को समय करीब पौने आठ बजे वी मार्ट मण्डी चौक से अपनी स्कूटी से अपने घर की ओर जा रहे थे, इस दौरान जीओ पेट्रोल पम्प से करीब 200 मी. आगे बडोवाला की ओर उनके पीछे से आ रहे मोटर साईकिल सवार दो लड़को द्वारा उनकी स्कूटी के आगे अपनी मोटर साईकिल को रोक कर उन्हें जान से मारने की नियत से उन पर फायर कर दिया, जिसमे उनका भाई गंभीर रूप से घायल हो गया। पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी। गठित पुलिस टीमों द्वारा 11 सितम्बर को घटना में शामिल अंकित चौहान पुत्र ध्रुव नारायण निवासी सोसायटी रोड लक्सर, केशव नगर, हरिद्वार को गिरफ्तार कर लिया जबकि उसका साथी अंकुर फरार हो गया। पूछताछ में उसके द्वारा रानीपुर निवासी अपने परिचित मोहित के माध्यम से उससे मिली एक युवती मालिया रहमान के कहने पर कुछ दिन पूर्व अपने साथी अंकुर के साथ मिलकर बड़ोवाला क्षेत्र में एक बैंक कर्मी को जान से मारने की नीयत से उस पर फायरिंग करने तथा आज मोहित व मालिया के कहने पर घटना में शामिल अपने साथी अंकुर के साथ फिरौती की बची हुई रकम को लेने देहरादून वापस आने की बात बतायी। पूछताछ में घटना की मुख्य षड्यंत्रकर्ता मालिया रहमान द्वारा बताया गया कि वर्ष 2020 से वर्ष 2023 तक वह उज्जीवन बैंक हरिद्वार में कार्यरत थी, इस दौरान उसकी मुलाकात बिजनोर निवासी सत्यम कुमार से हुई थी, जो उसके साथ उक्त बैंक में काम करता था, जिसके बाद दोनों एक दूसरे से प्रेम करने लगे। वर्ष 2023 में अपने घर वालो के दबाव में उसने सहारनपुर निवासी एक व्यक्ति से निकाह कर लिया, तथा उज्जीवन बैंक से नौकरी छोड़कर उत्कर्ष बैंक में नौकरी शुरू कर दी। शादी के बाद भी सत्यम लगातार उसे फोन करता रहता था तथा वे दोनों एक दूसरे के संपर्क में थे, जिस कारण उसकी शादी टूट गयी और वह अपने मायके में रहने लगी, इस बीच वर्ष 2025 में सत्यम उज्जीवन बैंक की देहरादून शाखा में आ गया। सत्यम लगभग चार-पांच सालों तक उसके संपर्क में रहते हुए उसे शादी का झांसा देता रहा तथा फरवरी 2026 में उसने किसी अन्य लड़की से सगाई कर ली। सगाई के बाद सत्यम ने धीरे-धीरे उससे बात करना बंद कर दिया और फेसबुक, व्हाट्सएप व अन्य सोशल मीडिया साइट्स पर भी उसे ब्लॉक कर दिया। मालिया ने सत्यम को रास्ते से हटाने की योजना बनाई तथा अपने एक साथी मोहित के माध्यम से वह अंकित चौहान जो पूर्व में भी आपराधिक घटनाओं में जेल जा चुका है, से मिली तथा सत्यम को मारने के एवज में उसे मोटी धनराशि देने का ऑफर देते हुए उसे 5 लाख देने की बात कही तथा एडवांस्ड के तौर पर उसे 01 लाख 20 हजार रुपए दिए तथा बाकी की रकम सत्यम को रास्ते से हटाने के बाद देने की बात कही गई। 8 सितम्बर को अंकित अपने एक अन्य साथी अंकुर के साथ देहरादून आया तथा शिमला बायपास रोड पर बड़ोवाला में एक सुनसान स्थान पर उसके द्वारा सत्यम की स्कूटी को ओवरटेक करते हुए उसे जान से मारने की नियत से उस पर फायर कर दिया, गोली की आवाज सुनकर वहाँ काफी लोग इकट्ठा हो गए, जिस पर दोनों आरोपी पकड़े जाने के डर से मौके से फरार हो गए। घटना के बाद मालिया को अज्ञात व्यक्ति द्वारा सत्यम को गोली मारने तथा घटना में केवल उसके घायल होने की जानकारी मिली, जिस पर उसके द्वारा अपने साथी मोहित के माध्यम से अंकित चौहान से सम्पर्क किया तथा आज वह अपने साथी मोहित के साथ अंकित चौहान से मिलने देहरादून आई थी। जहां पटेलनगर क्षेत्र में आईएसबीटी के पास से पुलिस द्वारा उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। पुलिस ने उनको न्यायालय में पेश किया जहां से उनको न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया।

मुख्यमंत्री नाम से, प्रॉपर्टी डीलर काम से: करन माहरा

हमारे संवाददाता

देहरादून। प्रदेश कांग्रेस कमेटी द्वारा प्रदेश कांग्रेस चार्जशीट कमेटी की एक पत्रकार वार्ता का आयोजन होटल इन्द्रलोक में किया गया। पत्रकार वार्ता को प्रदेश कांग्रेस चार्जशीट कमेटी के अध्यक्ष करन माहरा, प्रदेश अध्यक्ष गणेश गोदियाल, नेता प्रतिपक्ष यशपाल आर्य, सहप्रभारी सुरेन्द्र शर्मा, चार्जशीट कमेटी के सदस्य मनोज रावत, डॉ. प्रेम बहुखंडी एवं डॉ. प्रतिमा सिंह ने संयुक्त रूप से संबोधित किया।

पत्रकार वार्ता में प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष गणेश गोदियाल ने धामी सरकार पर राज्य की बेशकीमती भूमि को खुर्दबुर्द करने का आरोप लगाते हुए कहा कि उन्होंने अपने पूरे कार्यकाल में केवल प्रदेशभर की बेशकीमती भूमि को खुर्दबुर्द कर केवल भूमाफिया की सरकार होने का प्रमाण दिया है तथा प्रदेश की सरकारी भूमि को अपने चहेतों को कौडियों के भाव बेच दिया है।

पत्रकार वर्ता के बिन्दु पर विस्तार से बताते हुए प्रदेश कांग्रेस चार्जशीट कमेटी के अध्यक्ष करन माहरा ने कहा कि मुख्यमंत्री प्रापर्टी डीलर की तरह काम कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि कौड़ियों के भाव बिकती देवभूमि या कॉरपोरेट का नया ठिकाना? उत्तराखण्ड निवेश एवं अवसंरचना विकास बोर्ड घोटालों का नया औजार बन चुका है। उत्तराखण्ड की 7,000 बीघा सरकारी भूमि लीज पर देने का फैसला प्रदेश के नौनिहालों के भविष्य पर गहरा असर करेगा। उन्होंने कहा कि जब आम नागरिकों के लिए जमीन खरीदने की सीमा 250 वर्गमीटर है, तो सरकार किस नैतिकता के तहत चुनिंदा कॉर्पोरेट्स को 7,000 बीघा सरकारी जमीन 90 साल के लिए परोस रही है? व्यावसायिक उपयोग वाली इस बेशकीमती जमीन का किराया कृषि भूमि के सर्किल रेट पर तय कर सरकारी खजाने को चूना क्यों लगाया जा रहा है? क्या 90 साल की यह तथाकथित लीज भविष्य में इस जमीन को स्थायी स्वामित्व में बदलने का पिछला दरवाजा है? इस हजारों बीघा जमीन पर पहला हक स्थानीय युवाओं और पंचायतों का होना चाहिए था या बाहरी वैश्विक कंपनियों का? मुख्यमंत्री की अध्यक्षता वाले बोर्ड ने यह निर्णय डेढ़ साल तक जनता से क्यों छिपाया? यह अपने आप में एक बड़ा सवाल है। पत्रकार वार्ता में प्रदेश महामंत्री संगठन राजेन्द्र भंडारी, अमरजीत सिंह भी उपस्थित थे।

रावत के सियासी 'कुनबे' पर ईडी की चोट

◆रावत बोले-आरोपों पर विश्वास नहीं, गलती साबित हुई तो जिम्मेदारी मेरी भी

कार्यालय संवाददाता

देहरादून। उत्तराखंड की राजनीति में हरीश रावत के दौर की फाइल एक बार फिर खुल गई है। 2016 की ग्राम विकास अधिकारी परीक्षा में कथित अनियमितताओं से जुड़े मामले में प्रवर्तन निदेशालय की कार्रवाई ने पूर्व मुख्यमंत्री के राजनीतिक कुनबे को सीधे कठघरे में ला खड़ा किया है। रावत के पूर्व ओएसडी और निजी सहायक रहे चंदन सिंह जीना के ठिकाने पर ईडी की छापेमारी में 32 लाख रुपये नकद, सोना और महंगी घड़ियां समेत अन्य कीमती सामान मिलने की रिपोर्ट सामने आई है। सबसे बड़ा राजनीतिक सवाल यह नहीं है कि ईडी की कार्रवाई में क्या मिला। असली सवाल यह है कि जिस दौर की भर्ती प्रक्रिया पर सवाल उठ रहे हैं, उस दौर में सत्ता के सबसे नजदीकी लोगों की भूमिका आखिर कितनी दूर तक जाती है?

रावत ने आरोपों को खारिज करते हुए अपने सहयोगी का बचाव किया है। उनका कहना है कि उन्हें जीना के खिलाफ लगाए गए आरोपों पर विश्वास नहीं है। साथ ही उन्होंने यह भी कहा है कि यदि उनकी ओर से कोई गलती साबित होती है तो उन्हें उसकी जिम्मेदारी लेनी चाहिए। हरीश रावत उत्तराखंड कांग्रेस के सबसे बड़े और अनुभवी चेहरों में हैं। इसलिए उनके पूर्व ओएसडी से जुड़ी ईडी कार्रवाई का राजनीतिक असर महज किसी सहयोगी की जांच तक सीमित नहीं रहेगा। 2016 की परीक्षा, तत्कालीन कांग्रेस सरकार और रावत के सत्ता काल का संदर्भ एक साथ सामने आने से भाजपा को कांग्रेस के पुराने शासन पर सीधा हमला करने का अवसर मिल गया है।

2027 के विधानसभा चुनाव की तैयारी के बीच यह घटनाक्रम कांग्रेस के लिए असहज करने वाला है। जिस पार्टी को भर्ती घोटालों और युवाओं के मुद्दे पर भाजपा को घेरना था, उसी के सबसे वरिष्ठ नेता से जुड़े राजनीतिक घेरे में अब जांच एजेंसी की कार्रवाई चर्चा का विषय बन गई है। ईडी की कार्रवाई में कथित रूप से नकदी, सोना और महंगी घड़ियां मिलने की खबर ने मामले को और राजनीतिक रंग दे दिया है। रिपोर्टों में 32 लाख रुपये नकद और करीब 200 ग्राम सोने की बरामदगी का भी उल्लेख है।

हालांकि इन संपत्तियों का स्रोत क्या है और इनका यूकेएसएसएससी प्रकरण से कोई प्रत्यक्ष संबंध है या नहीं, यह जांच का विषय है। बरामदगी को दोष सिद्धि मानना जल्दबाजी होगी, लेकिन इतनी बड़ी कार्रवाई ने राजनीतिक सवाल जरूर खड़े कर दिए हैं और यही सवाल रावत के सामने सबसे कठिन चुनौती बनकर खड़ा है कि क्या उनके बेहद करीबी रहे व्यक्ति की भूमिका सिर्फ संयोग है या जांच किसी बड़े नेटवर्क तक पहुंचेगी?

◆यूकेएसएसएससी केस ने फिर खोला 2016 का पन्ना, हरीश रावत के दौर की फाइल फिर खुली
◆पूर्व ओएसडी के ठिकाने पर छापे में 32 लाख नकद, सोना, लग्जरी घड़ियों की बरामदगी का दावा
◆भर्ती परीक्षा की कथित अनियमितताओं से जुड़े मामले ने 2027 से पहले बढ़ाई कांग्रेस की मुश्किलें
◆भाजपा के हाथ लगा कांग्रेस के पुराने शासनकाल पर वार का नया हथियार

घटनाक्रम के बीच रावत द्वारा कांग्रेस के पदों से इस्तीफे की पेशकश ने मामले को और राजनीतिक वजन दे दिया। रिपोर्टों के मुताबिक उन्होंने कांग्रेस के दो संगठनात्मक पदों से इस्तीफा दिया है। यानी एक तरफ रावत अपने सहयोगी पर लगे आरोपों पर विश्वास नहीं करने की बात कह रहे हैं, दूसरी तरफ राजनीतिक जिम्मेदारी से पीछे हटने का संदेश भी दे रहे हैं। यहीं से कांग्रेस के भीतर भी सवाल उठना स्वाभाविक है कि अगर आरोप बेबुनियाद हैं तो इस्तीफे की जरूरत क्यों पड़ी और अगर राजनीतिक जिम्मेदारी स्वीकार की जा रही है तो जांच के निष्कर्ष का इंतजार क्यों नहीं?

उत्तराखंड की राजनीति में भर्ती घोटाले सबसे संवेदनशील मुद्दों में रहे हैं। युवाओं के बीच सरकारी नौकरियों की परीक्षा में पारदर्शिता बड़ा राजनीतिक प्रश्न है। ऐसे में 2016 की परीक्षा से जुड़ी ईडी कार्रवाई को भाजपा निश्चित रूप से चुनावी मुद्दा बनाएगी। भाजपा का हमला सीधा होगाकृकि जिस कांग्रेस शासनकाल में परीक्षा हुई, उसी दौर के मुख्यमंत्री के करीबी पर अब जांच एजेंसी की कार्रवाई क्यों हो रही है? कांग्रेस के पास इसका राजनीतिक और कानूनी दोनों स्तरों पर जवाब देना होगा।

इस पूरे प्रकरण को केवल हरीश रावत बनाम भाजपा की लड़ाई बना देना भी जांच के मूल सवाल को छोटा कर देगा। असली सवाल यह है कि सरकारी भर्ती व्यवस्था में कथित गड़बड़ियों का नेटवर्क कितना गहरा था और उसमें किस-किस स्तर के लोगों की भूमिका थी। यदि जांच में रावत या उनके किसी सहयोगी की कोई भूमिका सामने आती है तो कानून को अपना काम करना चाहिए। यदि आरोप राजनीतिक या तथ्यहीन साबित होते हैं तो जांच के बाद स्थिति भी साफ होनी चाहिए। लेकिन फिलहाल इतना जरूर है कि 2016 का वह अध्याय, जिसे उत्तराखंड की राजनीति पीछे छोड़ देना चाहती थी, 2027 के चुनाव से ठीक पहले फिर सामने खड़ा है और इस बार सवाल केवल भर्ती परीक्षा का नहीं है।

सवाल यह है कि सत्ता के गलियारों में किसकी पहुंच कितनी थी, किसने उस पहुंच का इस्तेमाल किया और उस दौर की राजनीतिक जवाबदेही आखिर तय होगी या फिर फाइलों के साथ सवाल भी दफन हो जाएंगे? रावत के सामने अब राजनीतिक चुनौती दोहरी है कि सहयोगी का बचाव भी करना है और उस दौर की सत्ता पर उठ रहे सवालों का जवाब भी देना है।

देश के कई हिस्सों में एच1एन1 का बढ़ा खतरा

संवाददाता

नई दिल्ली। देश के कई हिस्सों में स्वाइन फ्लू यानी एच1एन1 के मामले फिर बढ़ने लगे हैं। दिल्ली के अलावा कर्नाटक, महाराष्ट्र, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, हरियाणा और चंडीगढ़ समेत कई राज्यों में संक्रमित मरीज सामने आए हैं। स्वास्थ्य विशेषज्ञों ने लोगों से घबराने के बजाय सतर्क रहने और लक्षण दिखाई देने पर समय रहते चिकित्सकीय सलाह लेने की अपील की है। दिल्ली में एच1एन1 के मामलों में लगातार बढ़ोतरी दर्ज की जा रही है। स्वास्थ्य विभाग के आंकड़ों के मुताबिक अगस्त के अंत तक राजधानी में हजारों मामले सामने आ चुके थे। वहीं, कर्नाटक में भी बड़ी संख्या में एच1एन1 और इन्फ्लुएंजा के मरीज मिले हैं। एच1एन1 में तेज बुखार, खांसी, गले में खराश, नाक बहना, सिरदर्द, शरीर में दर्द और अत्यधिक थकान जैसे लक्षण हो सकते हैं। कुछ मरीजों में मतली, उल्टी और दस्त की शिकायत भी देखने को मिलती है। सामान्य फ्लू की तुलना में एच1एन1 में तेज बुखार और पेट से जुड़ी समस्याएं अधिक हो सकती हैं। यदि बुखार या फ्लू जैसे लक्षण कई दिनों तक बने रहें, सांस लेने में परेशानी हो, सीने में दर्द या भारीपन महसूस हो अथवा मरीज की हालत लगातार बिगड़ रही हो तो तत्काल डॉक्टर से संपर्क करना चाहिए। बच्चों, बुजुर्गों और पहले से गंभीर बीमारी से जूझ रहे लोगों को विशेष सावधानी बरतने की सलाह दी गई है। बीमारी से बचने के लिए हाथों को नियमित रूप से धोना, खांसते या छींकते समय मुंह-नाक ढकना और फ्लू के लक्षण होने पर दूसरों से दूरी बनाए रखना जरूरी है।

भाजपा को हराने के लिए एकजुट न हों मुस्लिम : इमरान

संवाददाता

बुलंदशहर। कांग्रेस सांसद इमरान मसूद ने मुस्लिम मतदाताओं से भाजपा को हराने के नाम पर एकजुट होकर मतदान नहीं करने की अपील की है। उन्होंने कहा कि मतदाताओं को किसी एक पार्टी के पक्ष में ध्रुवीकृत होने के बजाय अपने विवेक से मतदान करना चाहिए।

बुलंदशहर में एक कार्यक्रम के दौरान इमरान मसूद ने कहा कि चुनाव में किसी पार्टी को हराने के उद्देश्य से एकजुट होना सही रणनीति नहीं है। उन्होंने मुस्लिम समाज से अपील की कि वह अपने हितों और क्षेत्र के विकास को ध्यान में रखते हुए मतदान करे।

मसूद ने कहा कि लोकतंत्र में हर मतदाता को अपनी पसंद के उम्मीदवार को चुनने का अधिकार है। उन्होंने कहा कि केवल भाजपा को हराने के नाम पर किसी एक दल के पक्ष में वोट डालने के बजाय चुनावी मुद्दों और उम्मीदवार के कामकाज को प्राथमिकता दी जानी चाहिए।

इमरान मसूद ने कहा कि उम्मीदवार कौन है, इससे ज्यादा जरूरी उसकी विचारधारा है।

उन्होंने कहा कि उम्मीदवार इमरान मसूद हो, श्योपाल सिंह हो या सैनी समाज से कोई नेता, अगर वह विचारधारा के प्रति प्रतिबद्ध है तो वही समाज की रक्षा करेगा। उन्होंने कांग्रेस और राहुल गांधी के नाम पर एकजुट होने की अपील की।

उत्तराखण्डः पार्किंग सुविधाओं का हुआ विकास, आवास विभाग की 63 परियोजनाओं का कार्य पूर्ण

संवाददाता

देहरादून। प्रदेश में पर्यटकों और श्रद्धालुओं की साल दर साल बढ़ती संख्या को देखते हुए प्रदेश सरकार आधारभूत सुविधाओं के विस्तार में जुट गई है। ट्रैफिक जाम से निजात दिलाने और चारधाम यात्रा को और सुगम बनाने के लिए युद्धस्तर पर काम हो रहा है। आवास विभाग उत्तराखण्ड पार्किंग सुविधाओं के विकास में जुटा है। चार वर्षों में आवास विभाग ने 63 पार्किंग परियोजनाओं के तहत 4202 वाहनों की क्षमता की पार्किंग का निर्माण कराया है। धामी सरकार के इस कदम से जहां पर्वतीय जिलों में आम लोगों और पर्यटकों को जाम से राहत मिली है, वहीं स्थानीय लोगों की राह भी आसान हुई है। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी के नेतृत्व में उत्तराखण्ड में पर्यटक सुविधाओं के विकास पर विशेष जोर दिया जा रहा है। सड़क, रेल और हवाई कनेक्टिविटी का विस्तार किया जा रहा है। पर्यटकों और श्रद्धालुओं की बढ़ती संख्या को देखते हुए पार्किंग सुविधाओं के विकास पर विशेष फोकस किया गया है।

मुख्यमंत्री के दिशानिर्देश पर उत्तराखण्ड का आवास विभाग पर्वतीय जनपदों के प्रमुख शहरों, तीर्थ स्थलों और पर्यटन केंद्रों में पार्किंग नेटवर्क के विस्तार में जुटा है। स्थान की उपलब्धता के अनुसार सरफेस पार्किंग, बहुमंजिला (मल्टीलेवल) पार्किंग और ऑटोमेटेड पार्किंग का निर्माण किया गया है। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी की पहल पर अब सरोवर नगरी नैनीताल में पार्किंग की समस्या हल हो सकेगी। प्रदेश सरकार मेट्रोपोल होटल परिसर क्षेत्र में पार्किंग का निर्माण कर रही है। इस पार्किंग के तैयार होने पर लगभग 700 वाहन यहां पार्क किए जा सकेंगे। सुप्रसिद्ध कैंची धाम में श्रद्धालुओं की बढ़ती संख्या को देखते हुए बहुमंजिला (मल्टी लेवल) पार्किंग का निर्माण किया जा रहा है। इस पार्किंग में एक बार में पांच सौ से अधिक वाहन पार्क किए जा सकेंगे। उत्तराखण्ड सरकार के के सचिव, आवास एवं राज्य संपत्ति विभाग डॉ आर राजेश कुमार ने कहा कि मुख्यमंत्री जी के दिशानिर्देशों के क्रम में प्रदेश में पार्किंग सुविधाओं के विकास पर जोर दिया गया है। पर्वतीय जनपदों में 63 पार्किंग परियोजनाओं का कार्य पूर्ण होने के बाद पार्किंग की समस्या काफी हद तक हल हो गई है। इससे पर्यटकों और श्रद्धालुओं के साथ ही स्थानीय नागरिकों को भी राहत मिली है। उत्तराखण्ड देश-दुनिया के पर्यटकों और श्रद्धालुओं का पसंदीदा गंतव्य बन गया है। पिछले वर्ष ही छह करोड़ से अधिक लोग यहां पहुंचे हैं। इसको देखते हुए प्रदेश सरकार लगातार यात्री सुविधाओं का विस्तार कर रही है। जाम की समस्या से निपटने के लिए सभी प्रमुख पर्यटन स्थलों और चार धाम यात्रा मार्गों पर पार्किंग सुविधाएं विकसित करने पर जोर दिया जा रहा है।

आर.एन.आई.- 59626/94

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक श्रीमती पुष्पा कांति कुमार द्वारा दिग्विजय सिनेमा बिल्डिंग घंटाघर, देहरादून से प्रकाशित तथा अवि प्रिंटर्स 21 ईसी रोड, देहरादून से मुद्रित।

प्रधान संपादक
कांति कुमार

संपादक
पुष्पा कांति कुमार

समाचार संपादक
आनंद कांति कुमार

कानूनी सलाहकारः
वी के अरोड़ा, *एडवोकेट*
बैजनाथ, *एडवोकेट*

कार्यालयः दिग्विजय सिनेमा बिल्डिंग देहरादून।
मो. 9358134808

नोटः सभी विवादों के लिये देहरादून न्यायालय ही मान्य होगा, प्रकाशित सामग्री के लिए प्रिंटर्स की कोई जिम्मेदारी नहीं होगी।